पेन्टाटयूक

अध्याय 11

निर्गमन का अवलोकन

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1

प्रारंभिक विचार 1

लेखनकारिता 2

समय 3

वास्तविक अर्थ 4

पृष्ठभूमियाँ 5

मॉडल 5

पूर्वाभास 6

आधुनिक अनुप्रयोग 8

संरचना और सामग्री 10

मिस्र से छुटकारा (निर्गमन 1:1–18:27) 11

छुटकारे से पहले (1:1–4:31) 11

छुटकारे के दौरान (5:1–18:27) 13

कनान के लिए तैयारी (निर्गमन 19:1–40:38) 15

इस्राएल की वाचा (19:1–24:11) 15

इस्राएल का मिलाप वाला तम्बू (24:12–40:38) 18

प्रमुख विषय 20

वाचा को निभाने वाला (1:1–4:31) 21

विजयी योद्धा (5:1–18:27) 23

मिस्र में 24

कूच में (13:17–18:27)। 25

वाचा रूपी व्यवस्था का देने वाला (19:1–24:11) 26

वर्तमान योद्धा (24:12–40:38) 28

उपसंहार 31

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पेन्टाटयूक

अध्याय ग्यारह

निर्गमन का अवलोकन

प्रस्तावना

हर एक संगठन परिवर्तनों से होकर गुज़रता है, लेकिन जब नेतृत्व एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पारित होता है तो ये परिवर्तन बहुत हानिकारक हो सकते हैं। जब किसी कलीसिया के अंतिम संस्थापक सदस्य की मृत्यु हो जाती है, या किसी व्यवसाय का उद्यमी सेवानिवृत हो जाता है, तो जो प्रभारी रह जाते हैं वे नई चुनौतियों का सामना करते हैं। तो, एक प्रश्न जो लगभग हमेशा उठता है वह यह है: नई पीढ़ी को पिछली पीढ़ी की प्राथमिकताओं और कार्यों का किस हद तक पालन करना चाहिए?

कई तरीकों से, जब इस्राएल के लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमा पर डेरा डाले थे तो उन्हें इस प्रश्न का सामना करना पड़ा। मूसा अपने जीवन की समाप्ति की ओर तेजी से बढ़ रहा था, और इस्राएली लोग कई नई चुनौतियों का सामना कर रहे थे। इसलिए, उन्हें यह जानने की ज़रूरत थी कि जिन प्राथमिकताओं और कार्यों को मूसा ने उनके लिए स्थापित किया था, उनका उन्हें कितना पालन करते रहना चाहिए। क्या उन्हें अलग मार्ग पर चलने की ज़रूरत पड़ेगी? या उन्हें मूसा के मार्ग पर चलते रहना चाहिए? बाइबल की दूसरी पुस्तक, वह पुस्तक जिसे अब हम निर्गमन कहते हैं, उसकी रचना इन और इसी तरह के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए हुई थी।

यह पाठ पेन्टाटयूक के उस भाग पर विचार करता है जो बाइबल की दूसरी पुस्तक को शामिल करती है। हमने इसका शीर्षक रखा है "निर्गमन का अवलोकन।" इस पाठ में हम कई बुनियादी मुद्दों का पता लगाएंगे जो हमें इस बात पर अधिक गहराई से देखने के लिए तैयार करेंगे कि जब यह पहली बार लिखा गया था तो निर्गमन का अर्थ क्या था और आज अपने जीवनों में हमें इसे कैसे लागू करना चाहिए।

हमारा पाठ तीन प्रमुख भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम कुछ प्रारंभिक विचारों पर ध्यान देंगे, जिन्हें जब हम निर्गमन का अध्ययन करते हैं तो अपने सामने रखना चाहिए। दूसरा, हम पुस्तक की संरचना और सामग्री की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम निर्गमन के कुछ प्रमुख विषयों पर गौर करेंगे। आइए सबसे पहले कुछ प्रारंभिक विचारों को देखते हैं।

प्रारंभिक विचार

मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम ठीक ही विश्वास करते हैं कि निर्गमन की पुस्तक पवित्र आत्मा की प्रेरणा के आधीन लिखा गया था, और यह परमेश्वर का वचन है। यह विश्वास हमें याद दिलाता है कि हम किसी सामान्य पुस्तक की बात नहीं कर रहे हैं। निर्गमन पावन पवित्र शास्त्र है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को दिया था। इसलिए, एक या अन्य तरीके से, मसीह के अनुयायियों के रूप में, इस पुस्तक का आज आपके और मेरे ऊपर अधिकार है। लेकिन साथ में, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने इस पुस्तक को उन लोगों को दिया था जो हजारों वर्ष पहले रहते थे। इसलिए, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हमारे आधुनिक अनुप्रयोग पुस्तक के उस उद्देश्य के लिए सच हैं जब यह पहली बार लिखा गया था।

जब हम निर्गमन को देखना शुरू करते हैं, तो हम चार अलग-अलग प्रारंभिक विचारों का परिचय देंगे। सबसे पहले, हम इसके लेखनकारिता को स्पर्श करेंगे। पुस्तक को किसने लिखा? दूसरा, हम इसके समय का पता लगाएंगे, कब और कहाँ पुस्तक को लिखा गया था। तीसरा, हम निर्गमन के वास्तविक

अर्थ को सारांशित करेंगे। और चौथा, हम संबोधित करेंगे कि इन बातों को पुस्तक के हमारे आधुनिक अनुप्रयोग का मार्गदर्शन कैसे करना चाहिए। आइए सबसे पहले निर्गमन की लेखनकारिता को देखते हैं।

लेखनकारिता

निर्गमन की लेखनकारिता का प्रश्न समग्र रूप से पेन्टाटचूक की लेखनकारिता के ऊपर लंबी और जटिल बहस का हिस्सा है। लेकिन इस पाठ में, हम सिर्फ कुछ ही तरीकों को उल्लेख करेंगे जिनमें यह बहस निर्गमन के लिए लागू होते हैं।

निर्गमन का एक सरसरी वाचन हमें बताता है, बहुत कम से कम, कि पुस्तक की सामग्री के साथ मूसा का बहुत बड़ा संबंध है। निर्गमन बार-बार दावा करता है कि परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से सीनै पर्वत पर इसका बहुत कुछ मूसा को प्रकट किया। इसमें दस आज्ञाएं, वाचा की पुस्तक, और इस्राएल के मिलाप वाले तंबू के लिए निर्देश शामिल हैं।

लेकिन, जैसा कि हम ने पेन्टाटचूक के दूसरे पाठों में देखा है, अधिकांश आलोचनात्मक विद्वानों ने मूसा की लेखनकारिता को खारिज किया है। उन्होंने यह तर्क दिया कि निर्गमन सहित पेन्टाटचूक का ईश्वरीय-ज्ञान बहुत उन्नत है और यह मूसा के दिनों से नहीं आ सकता। और इसके बजाय, वे मानते हैं, कि यह छठवी शताब्दी ईसा पूर्व में बाबुल की बंधुवाई के अंत से पहले पूरा नहीं किया गया था।

हालांकि ये आलोचनात्माक दृष्टिकोण व्यापक हैं, फिर भी इनके पीछे ऐतिहासिक और ईश्वरीय-ज्ञान वाली परिकल्पनाएं अत्यधिक काल्पनिक और अविश्वसनीय हैं। इसके अलावा, सुसमाचारीय दृष्टिकोण से, यह महत्वपूर्ण है कि हम पवित्र शास्त्रों में पाए गए आधिकारिक प्रमाणों का पालन करें। पुराने नियम के लेखकों और मसीह और उनके प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं नें सर्वसम्मति से इस परिप्रेक्ष्य का समर्थन किया कि मूसा ही वह व्यक्ति था जो निर्गमन सहित पूरे पेन्टाटचूक के लिए जिम्मेदार था।

अब सुसमाचारीय लोगों ने मूसा को पुस्तक का "मौलिक," "वास्तविक," या "आवश्यक" लेखक कहने के द्वारा मूसा के लेखनकारिता में इस विश्वास को सही रूप से योग्य करार दिया है। इसका अर्थ है कि बहुत कम संभावना है कि मूसा बस बैठ गया और स्वयं अपने हाथों से पूरे निर्गमन के लिख डाला। लेकिन मूसा पुस्तक में बताई गई हर घटना का एक विश्वनीय चश्मदीद गवाह था, सिवाय शायद उनके जो उसके जन्म और बचपन के दिनों से संबंधित थे। यह संभव है कि उसने अपने दिनों के राष्ट्रिय नेताओं के रिवाज का पालन किया और अपने निर्देशन के आधीन लिखने के लिए शास्त्रियों, या लिपिकारों का इस्तेमाल किया था। फिर भी, जो कुछ भी हुआ, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि निर्गमन मूसा के दिनों के दौरान पवित्र आत्मा की प्रेरणा के आधीन में लिखा गया था।

> निर्गमन की पुस्तक को किसने लिखा यह प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, और जैसा कि हम स्वयं पुस्तक के पाठ के माध्यम से पढ़ते हैं, और इतिहास की उन घटनाओं को गंभीरता से लेते हैं जिनको वह रिकॉर्ड करती है, तो यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि मूसा ने निर्गमन की पुस्तक का बहुत सारा हिस्सा नहीं लिखा था जैसा कि यह हमारे पास वर्तमान में है। मूसा को उस पुस्तक में परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में चित्रित किया गया है। पूरे पेन्टाटचूक में उन्हें एक अद्वितीय प्रवक्ता के रूप में चित्रित किया गया है, परमेश्वर के लोगों के पूरे इतिहास में, एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर को किसी भी अन्य भविष्यद्वक्ता से ज्यादा जानता था जब तक कि स्वयं यीशु नहीं आ गया था। और क्योंकि वह परमेश्वर को इतनी आत्मीयता से जानता था, उसके साथ आमने-सामने बातें करता था जैसे कोई व्यक्ति एक दोस्त के साथ बातें करता है, और लोगों के लिए परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। और क्योंकि पुराना नियम, जैसा कि वह पेन्टाटचूक के बाद जारी रहता है, मूसा के टोराह की इस पुस्तक को वापस

> संदर्भित करता है और लोगों को दिन-रात इसका मनन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, यह सोचना समझ में आता है कि मूसा पुस्तक का लेखक है। अब, कुछ अद्यतन हो सकते है जो जगह के नामों के साथ हुआ या जैसे समय बीतता गया यहाँ तक कि कुछ व्याकरणिक रूपों और चीजों के साथ, जो एक प्रेरणा पाए हाथ से हुआ, इस्राएल में भविष्यद्वक्ता वाला हाथ। लेकिन हाँ, मुझे लगता है कि निर्गमन की पुस्तक मूसा की लेखनी से आई है, मूसा की लेखनी से...और इसलिए, मूसा को न केवल इस्राएल में परमेश्वर के मुख्य प्रवक्ता के रूप में चित्रित किया गया है, बल्कि एक लेखक, एक पुस्तक के लेखक के रूप में भी चित्रित किया गया है।
>
> — प्रो. थॉमस ऐगर

मूसा की लेखनकारिता के बारे में इन विचारों को ध्यान में रखने के साथ, हमें प्रारंभिक विचारों के दूसरे सेट की ओर मुड़ना चाहिए, वह समय, या परिस्थितियां जिनमें निर्गमन को लिखा गया था।

समय

मोटे तौर पर कहें तो, मूसा ने निर्गमन को निर्गमन 3:1–4:31 में जलती हुई झाड़ी पर अपनी बुलाहट, और व्यवस्थाविवरण 34:1-12 में, मोआब के मैदानों पर अपनी मृत्यु के बीच कहीं लिखा था। लेकिन सबूत हमें इससे और सटीक होने में सक्षम बनाते हैं। निर्गमन में कम से कम दो हवाले प्रकट करते हैं कि पुस्तक को वास्तव में तब पूरा किया गया था जब इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमा पर डेरा डाले था। निर्गमन 16:35 को सुनिए जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुंचे तब तक, अर्थात चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे; वे जब तक कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मन्ना को खाते रहे (निर्गमन 16:35)।

जाहिर है, कि निर्गमन की पुस्तक पूरी होने से पहले ये घटनाएँ हुई होंगी। इसलिए, हम जानते हैं कि इस्राएल "चालीस वर्षों" के लिए पहले ही घूमता रहा था। और वे "एक बसे हुए देश" या "कनान की सीमा" पर पहुंच गए थे।

अंतिम रचना के समय में इसी तरह की झलक निर्गमन 40:38 में दिखाई देती है, जो पुस्तक का अंतिम पद है:

> इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:38)।

ध्यान दें कि यह पद परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति को "उनकी सारी यात्रा में" मिलाप वाले तंबू के ऊपर होने का उल्लेख करता है। इस ऐतिहासिक टिप्पणी से स्पष्ट होता है कि मूसा ने अपने जीवन के अंत में निर्गमन की पुस्तक को पूरा किया। जब इस्राएलियों ने अपने चालीस वर्ष तक घूमने को समाप्त किया था और मोआब के मैदानों पर आ पहुँचे थे तब उसने लिखा।

अभी तक निर्गमन की पुस्तक की लेखनकारिता और समय से संबंधित हमने कई प्रारंभिक विचारों पर ध्यान दिया है। अब, हम इसके वास्तविक अर्थ को सारांशित करने की स्थिति में हैं। परमेश्वर ने मूसा से निर्गमन की पुस्तक की रचना क्यों करवाई? और कैसे मूसा ने मोआब के मैदानों में अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को प्रभावित करने की आशा की थी?

वास्तविक अर्थ

शुरू से, हमें ध्यान देना चाहिए कि मूसा के कई सामान्य लक्ष्य थे जो अकसर पुराने नियम में दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन स्तुतिगान वाली पुस्तक है क्योंकि इसने परमेश्वर की स्तुति एवं आराधना करने के लिए इस्राएल की लगातार अगवाई की। लेकिन यह ईश्वरीय-ज्ञान वाली भी है क्योंकि इसने बार-बार परमेश्वर के बारे में सत्यों की व्याख्या की है। और संपूर्ण पुस्तक इस मायने में राजनैतिक है क्योंकि इसको इस्राएल के राष्ट्रिय जीवन को आकार देने के लिए डिजाइन किया गया था। यह तर्क-वितर्क वाली भी है क्योंकि यह झूठे दृष्टिकोणों का विरोध करती है। यह नैतिक है क्योंकि यह उजागर करती है कि इस्राएल को कैसे परमेश्वर की आज्ञा माननी थी। और यह प्रेरणा देने वाली है क्योंकि यह परमेश्वर के प्रति वफादारी को प्रोत्साहित करती और निष्ठाहीनता के खिलाफ चेतावनी देती है। ये और इसी तरह के अन्य लक्ष्य सामान्य तौर पर निर्गमन की पूरी पुस्तक की विशेषता को बताते हैं।

हालांकि, निर्गमन बाइबल की कई पुस्तकों के साथ इन और अन्य विशेषताओं को साझा करती है, मूसा के पास निर्गमन को लिखने का एक अनूठा, प्रमुख उद्देश्य था। इन के साथ-साथ इस एकीकृत उद्देश्य को संक्षेप में प्रस्तुत करना मददगार है:

> निर्गमन की पुस्तक ने निर्गमन की पहली पीढ़ी के ऊपर मूसा के ईश्वरीय द्वारा अभिषिक्त अधिकार की पूष्टि की ताकि दूसरी पीढ़ी को उनके जीवनों के ऊपर मूसा के स्थायी अधिकार को स्वीकार करने में निर्देशित किया जा सके।

यह सारांश तीन कारकों को स्पर्श करता है जो निर्गमन के वास्तविक अर्थ की ओर हमें एक सहायकपूर्ण उन्मुखीकरण प्रदान करते हैं। सबसे पहले, यह हमें याद दिलाता है कि, अधिकांश भाग के लिए, पुस्तक को निर्गमन की पहली पीढ़ी के बारे में लिखा गया था, लेकिन साथ ही, पुस्तक को निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के लिए लिखा गया था।

निर्गमन की पुस्तक से परिचित हर एक व्यक्ति जानता है कि इनमें से अधिकांश उन घटनाओं का विवरण देते हैं जब मूसा ने इस्राएल को मिस्र से निकाला था। हम इस समय को इतिहास का "प्राचीन संसार" कह सकते हैं। फिर भी, पहली पीढ़ी के "प्राचीन संसार" के बारे में जो भी कुछ निर्गमन कहता है उसको निर्गमन की दूसरी पीढ़ी से बात करने के लिए डिजाइन किया गया था जिसे हम "उनका संसार" कह सकते हैं।

अब यह ध्यान में रखना जरूरी है कि बहुत कम प्राचीन इस्राएली लोग पढ़ सकते थे। इसलिए, जब हम दूसरी पीढ़ी के "श्रोता" की बात करते हैं, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि हर एक पुरुष, महिला और बच्चों ने निर्गमन की प्रति उठाई और अपने लिए उसे पढ़ा। इसके विपरीत, पुराने नियम के अन्य भागों के समान, मूसा ने निर्गमन को मुख्यतः इस्राएल के अगुवों के लिए लिखा। यहोशू, गोत्रों के प्राचीन, न्यायी लोग, और याजक एवं लेवी लोग निर्गमन के प्राथमिक ध्यान-केंद्रण में थे। और इस्राएल के बाकी लोगों के लिए पुस्तक की सामग्री को पहुँचाना और समझाना यह इन अनुवों की जिम्मेदारी थी। इस कारण से, निर्गमन सबसे प्रत्यक्ष रूप में उन मुद्दों को संबोधित करता है जिनका सामना दूसरी पीढ़ी ने एक राष्ट्र के रूप में किया।

यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि "उनके संसार" के लिए मूसा का अधिकांश ध्यान अंतनिर्हित रहा। फिर भी, दूसरी पीढ़ी अकसर हमारे लिए सामने की ओर आती है ताकि हम आश्वस्त हो सकें कि मूसा ने "उनके संसार" को ध्यान में रखकर लिखा। जैसा कि हमने पहले ही ध्यान दिया, दोनों निर्गमन 16:35 और 40:38 दूसरी पीढ़ी को संदर्भित करते हैं। इसके अलावा, निर्गमन 6:13-27 में वंशावली का रिकॉर्ड हारून के पोते, पीनहास तक जाता है। और हम बाद में देखेंगे कि कई अन्य अनुच्छेद उन मूद्दों को संबोधित करते हैं जो कि दूसरी पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक थे। इन एवं इसी तरह के संदर्भों से संकेत मिलता है कि जब मूसा ने इस पुस्तक को लिखा तो उसने निर्गमन की पहली और दूसरी दोनों पीढ़ियों को ध्यान में रखा था।

निर्गमन के लिए मूसा के मूल उद्देश्य के हमारे सारांश का दूसरा पहलू यह है कि "पहली पीढ़ी" के बारे में जो कुछ भी इसने कहा, वह "दूसरी पीढ़ी को निर्देशित करने के लिए" लिखा गया था। कहने का तात्पर्य है, कि, मूसा ने निर्गमन को पूरी तरह से आधिकारिक पुस्तक के रूप में लिखा था जिसे कि उसके मूल, दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं को परमेश्वर की सेवा करने में मानना था।

जब हम निर्गमन की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मूसा ने दूसरी पीढ़ी के लिए इसे प्रासंगिक बनाने के लिए अपने ऐतिहासिक अभिलेख को सावधानीपूर्वक आकार दिया था। कनान की सीमा पर उसके साथ डेरा डालने वालों को संबोधित करने हेतु, मूसा को पहली और दूसरी पीढ़ियों के बीच कई विविधताओं पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना था। वह जानता था कि वे अलग-अलग समयों और स्थानों पर रहे थे, और यह कि उन्हें अलग-अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। इसलिए, उनके बीच संपर्कों के बिंदुओं को उजागर करने के लिए मूसा ने कुशलता के साथ निर्गमन के प्रत्येक भाग को डिजाइन किया। इन संपर्कों ने उसके मूल श्रोताओं को अपने और उनके पितरों के बीच अन्तर को पाटने में मदद की।

पृष्ठभूमियाँ

मूसा ने तीन बुनियादी प्रकार के संपर्कों को बनाया जिन्होंने उसके मूल श्रोताओं के लिए उसकी पुस्तक के अधिकार को स्पष्ट बनाया। उसके सबसे साधारण संपर्क में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शामिल थी। इन अनुच्छेदों ने मूल श्रोताओं के विशेषाधिकारों और जिम्मेदारियों के ऐतिहासिक जड़ों पर ध्यान-केंद्रित किया।

एक प्रकार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निर्गमन 3:8 में दिखाई देती है जहाँ इस्राएल के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा उस प्रतिज्ञा के पूरा होने साथ जुड़ती है। इस पद में, परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से निकाल कर "ऐसे देश में लाने की प्रतिज्ञा की जहाँ दूध और मधु की धारा बहती है।" मूसा के श्रोताओं के लिए यह भविष्यवाणी प्रासंगिक थी क्योंकि वे अपने दिनों में इसे पूरा होता हुआ देखने के कगार पर थे।

दूसरे प्रकार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पहली पीढ़ी को दी गई परमेश्वर की आज्ञाओं और बाद में दूसरी पीढ़ी के दायित्वों में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 20:1-17 में, मूसा ने बताया कि कैसे परमेश्वर ने पहली पीढ़ी को दस आज्ञाएं दी। इस घटना ने दूसरी पीढ़ी के लिए नैतिक दायित्वों का आधार बनाया।

मॉडल

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अलावा, मूसा ने अपने श्रोताओं को ऐतिहासिक मॉडल भी प्रदान किए जिनका उन्हें अनुकरण करना या अस्वीकार करना था। इस प्रकार के संबंध को स्थापित करने के लिए, मूसा ने पहली पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं के बीच पर्याप्त समानताओं को इंगित करने हेतु कुछ अनुच्छेदों को आकार दिया।

कई अनुच्छेदों में, अस्वीकार करने हेतु अपने मूल श्रोताओं को नकारात्मक मॉडल देने के द्वारा मूसा ने इन प्रकारों की समानताओं का उपयोग किया। उदाहरण के लिए, निर्गमन 15:24, 16:2-12, और 17:3 में, सीनै तक कूच के दौरान, इस्राएल का बार-बार, हठीला बड़बड़ाना, नकारात्मक मॉडल को दिखाता है जिसे दूसरी पीढ़ी को अस्वीकार करना था।

इसके विपरीत, मूसा ने अपने श्रोताओं को अनुकरण करने के लिए सकारात्मक मॉडल भी दिए। उदाहरण के लिए, निर्गमन 36:8-38 में मिलाप वाले तम्बू के निर्माण के लिए इस्राएल ने परमेश्वर के निर्देशों का अनुपालन किया। यह दूसरी पीढ़ी के लिए जब बाद में उन्होंने मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की सेवा की तो अनुकरण करने हेतु एक सकारात्मक मॉडल को दिखाती है।

और मूसा ने मिश्रित मॉडल भी प्रदान किए, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों गुणों का उदाहरण देते हैं। और सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, निर्गमन 7:8-13 में, हारून ने परमेश्वर की आज्ञा मानी

और फिरौन के सामने अपनी छड़ी को फेंक दिया। उसके आज्ञापालन ने मिस्र से इस्राएल को छुटकारा देने में योगदान दिया। लेकिन, 32:1-35 में, उसने लोगों द्वारा पूजा करने के लिए सोने का बछड़ा बनाया, और उसकी अवज्ञा के कारण इस्राएल को कड़ी सजा मिली। इसने दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं को दोनों अनुकरण और अस्वीकार करने के लिए एक मिश्रित मॉडल दिया।

पूर्वाभास

तीसरे स्थान पर, कुछ मौकों पर मूसा ने अपने दूसरे पीढ़ी के श्रोताओं के ऐतिहासिक पूर्वाभाषों, या छायांकनों के रूप में काम करने के लिए घटनाओं के अपने रिकॉर्ड को आकार दिया।

> अकसर बाइबल की कहानी में, जैसा कि आधुनिक फिल्म और साहित्य में होता है, लेखक पूर्वाभास का उपयोग करेंगे। और हमारे पास निर्गमन की पुस्तक के आरंभ में ही इस बात का एक अच्छा उदाहरण है जब मूसा, मिस्र छोड़कर, कुएँ पर आता है और यितरो की बेटियों को इन मतलबी-नीच चरवाहों से बचाता है या छुड़ाता है। और यह पाठ जैसा कि वह था, मूसा को एक छुटकारा देने वाले की भूमिका में होने के रूप में चित्रित करता है। खैर, यह पूर्वाभास देता है कि परमेश्वर उसके माध्यम से क्या करने जा रहा है। उसे मिस्र जो जाना था और परमेश्वर के लोगों को गुलामी से छुटकारा देना है।
>
> डॉ. रोबर्ट बी.किसहोम, जूनियर.

इस प्रकार का संबंध निर्गमन में उतना नहीं दिखाई देता जितना कि पुराने नियम की कुछ अन्य पुस्तकों में दिखाई देता है। लेकिन कुछ मामलों में, मूसा ने अतीत की घटनाओं को उन तरीकों से वर्णित किया जो उसके मूल श्रोताओं के अनुभवों से लगभग पूरी तरह मेल खाते थे। इन पूर्वाभाषों ने संकेत दिया कि इतिहास, जैसा कि वह था, दूसरी पीढ़ी के दिनों में स्वयं को दोहरा रहा था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 13:18 में इस्राएली लोग "पांति बान्धे हुए मिस्र से निकल गए।" पहली पीढ़ी की इस सैन्य व्यवस्था ने पूर्वाभास दिया था कि कैसे दूसरी पीढ़ी को भी सेना के रूप में विजय प्राप्त करने में जाने के लिए व्यवस्थित किया गया था।

इसी तरह, निर्गमन 40:34-38 लिखता है कि एक बार जब मिलाप वाला तम्बू ठीक से काम करने लगा था, तो जब परमेश्वर अपने लोगों के उनके कूच का नेतृत्व करता है तो वह धुएँ और आग के रूप में प्रकट होता है। इस ऐतिहासिक वास्तविकता ने अनुमान लगाया कि कैसे, 40 वर्षों बाद, परमेश्वर की उपस्थिति दूसरी पीढ़ी का उनके अपने दिनों में आगे अगुआई करने वाली थी।

जैसा कि हमने अभी देखा, मूसा ने दूसरी पीढ़ी के लिए पृष्ठभूमि, मॉडल और पूर्वाभास के रूप में काम करने के लिए पहली पीढ़ी के इतिहास के अपने अभिलेख को आकार दिया। उसने उन्हें परमेश्वर की सेवा में निर्देशित करने के लिए ऐसा किया। लेकिन यह सब हमें निर्गमन के वास्तविक अर्थ के हमारे सारांश के तीसरे, और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात पर लाती है। निर्गमन की पुस्तक को मुख्य रूप से पहली पीढ़ी पर मूसा के ईश्वरीय-अभिषिक्त अधिकार को प्रमाणित करने के लिए डिजाइन किया गया था ताकि दूसरी पीढ़ी अपने जीवनों के ऊपर मूसा के स्थायी अधिकार को स्वीकार करेगी।

अब, यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि निर्गमन की पुस्तक में अकसर मूसा के साथ-साथ हारून दिखाई देता है। लेकिन जब भी हारून को शामिल किया गया, निर्गमन के प्रत्येक बड़े हिस्से ने दूसरी पीढ़ी को उनके ऊपर मूसा के जारी रहने वाले अधिकार की पुष्टि करने के लिए बुलाहट दी। उन्हें मूसा के ईश्वरीय-ज्ञान वाले दृष्टिकोणों, उसके नैतिक सिद्धांतों, राष्ट्रिय नीतियों, और इन्हीं के समान अन्यों की आधीनता स्वीकार करनी थी। इस पाठ में बाद में, हम कुछ विस्तार से देखेंगे कि यह विषय कितनी

व्यापक है। लेकिन, इस बिंदु पर हम संक्षेप में सिर्फ दो तरीकों का उल्लेख करेंगे जिनमें यह पुस्तक मूसा के महत्व और इस्राएल पर उसके अधिकार पर जोर देती है।

सबसे पहले, यह देखना मुश्किल नहीं है कि निर्गमन के नाटक में मूसा ने केंद्रिय किरदार का रोल अदा किया। इसमे कोई शक नहीं कि, निर्गमन के पहले दो अध्याय मूसा का परिचय तुरंत नहीं कराते हैं। लेकिन एक बार जब हम निर्गमन 2:10 में उसके नाम को पढ़ते हैं, तो पुस्तक में जो कुछ भी होता है, वह किसी न किसी तरह से मूसा से स्पष्ट रूप से जुड़ा है। जब मिस्र से अपने लोगों को छुटकारा देने के लिए परमेश्वर तैयार था, तो उसने मूसा को बुलाया। मिस्रियों के खिलाफ हर एक चमत्कारी दंड में मूसा कार्यरत था। समुद्र दो भाग में तब बंटता है जब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और पानी के ऊपर अपने हाथों को फैलाया। मूसा ने इस्राएल के अगुवे के रूप में सेवा तब की जब परमेश्वर ने मिस्र से सीनै पर्वत तक देश का नेतृत्व किया। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपनी वाचा मूसा के द्वारा बाँधी। मूसा ने परमेश्वर की ओर से व्यवस्था की तख्तियाँ और वाचा की पुस्तक को दिया। परमेश्वर ने मिलाप वाले तम्बू के लिए मूसा को अपने निर्देशों को दिया। मूसा ने सीनै पर्वत की तली पर इस्राएल के मूर्ति-पूजा वाले संकट के दौरान परमेश्वर की सेवा की। और मूसा ने मिलाप वाले तम्बू के निर्माण की अगुआई की।

दूसरा, निर्गमन की पुस्तक इस्राएल के ऊपर मूसा के अधिकार को बार-बार उजागर करती है। यह पुस्तक इस तथ्य से संबंध रखती है कि इस्राएली लोगों ने निर्गमन 2:14; 5:21; 15:24; 16:2 और 3; और 17:2 जैसे अनुच्छेदों में अपने अगुवे के रूप में मूसा के अधिकार पर सवाल उठाया था। लेकिन अन्य समयों पर, निर्गमन 4:31; 14:31; और 20:19 जैसे अनुच्छेदों में इस्राएली लोगों ने अपने ऊपर मूसा के अधिकार को स्वीकार किया था। और हम निर्गमन 6:1-8 और 10-13; 24:2; और 34:1-4 जैसे अनुच्छेदों में परमेश्वर के पुनः-आश्वासन के बारे में पढ़ते हैं, कि उसने स्वयं इस्राएल के आधिकारिक अगवे के रूप में मूसा का अभिषेक किया। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, निर्गमन 19:9 को सुनें जहाँ परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर अपने आने वाले ईश-दर्शन या ईश्वरीय प्रकटीकरण को समझाया।

> मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिए कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें और सदा तुझ पर विश्वास करें (निर्गमन 19:9)।

जैसा कि यह पद इंगित करता है, परमेश्वर सीनै पर्वत पर "बादल के अंधियारे" में प्रकट होता है ताकि जब इस्राएली लोग मूसा के साथ परमेश्वर को बोलता हुआ सुनें तब वे "सदा [मूसा] पर विश्वास करेंगे।" जैसा कि हम यहाँ देख सकते हैं, यह पद निर्गमन के लिखे जाने के सबसे प्रमुख कारण पर ध्यान आकर्षित करता है। निर्गमन की पुस्तक ने इस्राएल के ऊपर मूसा के स्थायी अधिकार की पुष्टि की।

> जब सुसमाचारीय लोग निर्गमन जैसी पुस्तक के साथ चर्चा करते हैं, या, कह लीजिए, किसी भी अन्य पुस्तक के साथ, तो सभी के पास ईश्वरीय-केंद्रक बनने की स्वाभाविक प्रवृति होती है, और इससे मेरा मतलब है कि सब कुछ परमेश्वर के आसपास केंद्रित बनाना और यह कहना कि प्रत्येक पुस्तक और प्रत्येक पुस्तक का हर एक पहलू सब परमेश्वर के बारे में है। लेकिन वास्तव में, जब आप निर्गमन की पुस्तक पर एक नज़र डालते हैं, तो आपको वह आभास नहीं होता है। परमेश्वर महत्वपूर्ण है, और कई मायनों में, परमेश्वर मुख्य किरदार है, कम से कम इस मायने में कि वह उस इतिहास को नियंत्रित करता और उसमें कार्य करता है जिसके बारे में निर्गमन की पुस्तक बात करती है; वही है जो इस्राएल को मिस्र से छुटकारा देता है; वही है जो व्यवस्था देता है; वही है जो मिलाप वाला तम्बू देता है। लेकिन उसी समय, जब आप निर्गमन की पुस्तक में उन घटनाओं के दिए गए साहित्यिक चित्र को देखते हैं, तो जो आपको पता चलता है वह पहली बार में अजीब लग सकता है, लेकिन मैं सोचता हूँ कि यह सच है, और वह एक अपवाद के साथ है, निर्गमन की पूरी पुस्तक में परमेश्वर मूसा के माध्यम से करने के

अलावा कुछ नहीं करता है। और सिर्फ एक चीज़ जो परमेश्वर निर्गमन की पुस्तक में स्पष्ट रूप से करता है जो मूसा से अलग है वह है जब पहले अध्याय में परमेश्वर दाइयों को आशीष देता है। और इसलिए, निर्गमन की पुस्तक में जो हम पाते हैं वह यह है कि परमेश्वर प्रकट होता है और इस्राएल के लिए कार्यों को करता है, लेकिन मूसा हमेशा वहीं पर है, क्योंकि वही माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर वह कार्य कर रहा है। और इसका कारण यह है कि मूसा और उसका जीवन बस समाप्त होने को है, और मूसा इस्राएल को छोड़ने वाला था, लेकिन परमेश्वर इस्राएल को छोड़ने वाला नहीं था। और इसलिए वास्तविकता यह है कि जब आप निर्गमन की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो जिस पुस्तक के साथ आप चर्चा कर रहे हैं वह मोआब के मैदानों में पूरी की जा रही है, इस तथ्य के साथ चर्चा करते हुए कि मूसा इस्राएल को छोड़ने जा रहा था। और उन सब के परिणामस्वरूप, जब हम निर्गमन की पुस्तक पर एक नज़र डालते हैं, तो इस्राएल इस तरह के प्रश्न पूछ रहा है: हमारा नेतृत्व किसको करना है? उन्हें नेतृत्व कैसे करना चाहिए? वे कौन सी प्राथमिकताएं हैं जो उनके पास होनी चाहिए? अब जबकि मूसा हमें छोड़ने पर है तो हमें अपने दिनों में किस तरह के अधिकार का पालन करना चाहिए? और निर्गमन की पुस्तक को उस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बनाया गया है। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुटकारा अवश्य दिया, लेकिन उसने इस्राएल को मिस्र से छुटकारा मूसा के माध्यम से दिया। हाँ, परमेश्वर ने इस्राएल को व्यवस्था दी, लेकिन परमेश्वर ने व्यवस्था मूसा के माध्यम से दी। हाँ, परमेश्वर ने मिलाप वाला तम्बू दिया, पवित्र युद्ध वाला उसका तम्बू, लेकिन उसने ऐसा मूसा के माध्यम से किया। और यह निर्गमन की पुस्तक की विशेषता है। और इसलिए, पहली पीढ़ी में जो कुछ हुआ उस बारे में कहानियों को बताने के द्वारा निर्गमन की पुस्तक दूसरी पीढ़ी के लिए मूसा के अधिकार की पुष्टि करती है और कैसे लोगों के समक्ष परमेश्वर ने मूसा को प्रतिष्ठा दी, और उस प्रतिष्ठा के कारण, मूसा को दूसरी पीढ़ी के समक्ष भी प्रतिष्ठा दी जानी चाहिए, चाहे भले ही वह गुजरने वाला था।

डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

अब जबकि हमने निर्गमन की लेखनकारिता, समय, और वास्तविक अर्थ से संबंधित कुछ प्रारंभिक विचारों को देख लिया है, हमें इसके आधुनिक अनुप्रयोग पर कुछ टिप्पणियाँ करनी चाहिए। इस पुस्तक को आज मसीह के अनुयायियों के लिए कैसे लागू किया जाना चाहिए?

आधुनिक अनुप्रयोग

निर्गमन के समान जटिल पुस्तक को आधुनिक जीवन में अनगिनत तरीकों से लागू किया जा सकता है। हम यह जानते हैं क्योंकि हर एक व्यक्ति अद्वितीय है और अलग-अलग परिस्थितियों का सामना करता है। और हम इस पाठ में आधुनिक अनुप्रयोग पर बाद में और अधिक ध्यान से देखेंगे। लेकिन इस बिंदु पर, उन कुछ सामान्य दृष्टिकोणों को ध्यान में रखने में मदद मिलेगी जिन्हें हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए जब हम निर्गमन को आज अपने जीवनों के लिए लागू करते हैं।

मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम जानते हैं कि निर्गमन की पुस्तक हमारे लिए लागू होती है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है। लेकिन हमारे और मूल श्रोताओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। और इस कारण से, अपने आधुनिक अनुप्रयोग में मार्गदर्शन के लिए हमें हमेशा नए नियम की ओर मुड़ना चाहिए।

नया नियम हमें लगभग 240 बार निर्गमन का हवाला या संकेत देते हुए मार्गदर्शन प्रदान करता है। लेकिन नए नियम का एक अनुच्छेद विशेष रूप से मददगार है। 1 कुरिन्थियों 10:1-5 को सुनिए जहाँ प्रेरित पौलुस ने लिखा:

> **हमारे बाप दादे बादल के नीचे थे, और ...सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया और एक ही आत्मिक जल पीया; क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। परन्तु परमेश्वर उन में से बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिए वे जंगल में ढेर हो गए (1 कुरिन्थियों 10:1-5)।**

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, पौलुस ने कई घटनाओं का हवाला दिया जो कि निर्गमन की पुस्तक में बताए गए हैं। लेकिन जैसे कि अनुच्छेद जारी रहता है, अब 1 कुरिन्थियों 10:11 को देखें:

> **परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टांत की रीति पर थीं और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)।**

एक साथ, ये पद स्पष्ट रूप से मसीह के अनुयायियों के लिए निर्गमन की पुस्तक की प्रासंगिकता की पुष्टि करते हैं। जैसा कि पौलुस ने कहा, "ये बातें दृष्टांत रीति पर उनके लिए हुई।" और वे "हमारे लिए चेतावनी के लिए लिखी गई हैं।" पौलुस के वचन हमें यह देखने में मदद करते हैं कि निर्गमन न सिर्फ "प्राचीन संसार," के बारे में और न सिर्फ "उनके संसार," के लिए लिखा गया बल्कि यह "हमारे संसार," के लिए भी लिखा गया था। इस पाठ के संदर्भ में, निर्गमन की पुस्तक को सिर्फ अपने मूल श्रोताओं को निर्देशित करने के लिए डिजाइन नहीं किया गया था। यह मसीह के अनुयायियों के लिए, "हमारे लिए," भी था।

प्रेरित किस तरह मसीह के अनुयायियों के संसार का वर्णन करता है उसे सुनिए। हम वे लोग हैं "जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं।" यह शब्द "अंतिम समय" यूनानी शब्द *τέλος* (टेलोस) से अनुवादित है, जिसका अनुवाद अकसर "अंत" या "लक्ष्य" होता है। मसीही लोग उस समय में रहते हैं जब इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना मसीह में अपने अंत या लक्ष्य तक पहुँच रही है। सामान्य ईश्वरीय-ज्ञान के शब्दों में, हम जो यीशु का अनुसरण करते हैं, इतिहास के "युगांतकारी" या "अंतिम" युग में रहते हैं।

यह समझने के लिए कि पौलुस के मन में क्या था, हमें यह एहसास करना चाहिए कि जब हम मसीह में उद्धार वाले विश्वास में आते हैं, तो हम एक यात्रा का हिस्सा बन जाते हैं। हम वास्तव में मूसा के "अंतिम दिनों" और मिस्र में दासत्व एवं अत्याचार से परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए हुए देश में स्वतंत्रता एवं आशीषों में प्रवेश करते हैं।

नया नियम संपूर्ण तरीके से सिखाता है कि युगांतकारी युग, या मसीह में अंतिम दिन, तीन प्रमुख चरणों में प्रकट होता है। इसलिए, बाइबल के दृष्टिकोण से, मूसा और इस्राएल की यात्रा का अंतिम चरण मसीह के अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान उसके राज्य के उद्घाटन के साथ शुरू हुआ। और निर्गमन की पुस्तक में मूसा और इस्राएल की यात्रा इन अंतिम दिनों में आगे तब बढ़ती है जब पूरे कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता के दौरान हम मसीह के साथ एक होकर रहते हैं। और अंत में, जैसे कि मूसा और इस्राएल ने मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश की यात्रा की, मसीह में हमारी यात्रा के अंतिम दिन उसके राज्य की परिपूर्णता के साथ समाप्त होंगी, जब उसकी महिमामय वापसी में, हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में प्रवेश करेंगे।

इसलिए, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 10 संकेत देता है, हमें निर्गमन में प्रत्येक विषय को आधुनिक मसीहों के लिए मसीह में अंतिम दिनों के उद्घाटन, निरंतरता और परिपूर्णता के प्रकाश में लागू करना चाहिए।

हम इन संबंधों को कई तरीकों से बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन हमें बताता है कि इस्राएल सीनै पर्वत पर मूसा में परमेश्वर के साथ वाचा में बंधा। इसी तरह से, मसीही लोग मसीह में नई वाचा में बंधते हैं। लेकिन यह नई वाचा मसीह के पहले आगमन के साथ शुरू हुई; यह अभी जारी है; और यह मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी हो जाएगी।

एक अन्य उदाहरण के रूप में, निर्गमन ने मूसा के दिनों में मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की उपस्थिति को बताया। नया नियम सिखाता है कि मसीह में परमेश्वर की उपस्थिति उससे भी बड़ कर है। यीशु स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति था जिन्होंने अपने राज्य के उद्घाटन में हमारे बीच डेरा डाला था। राज्य की निरंतरता में, पवित्र आत्मा अब व्यक्तिगत विश्वासियों और सामूहिक रूप से कलीसिया में वास करता है। और इतिहास की समाप्ति पर, जब नई सृष्टि को उसका पवित्र निवास बना दिया जाएगा तो परमेश्वर की महिमा सब कुछ को भर देगी।

निर्गमन ने मूसा के दिनों में परमेश्वर द्वारा उसके शत्रुओं की हार को भी उजागर किया है। और नया नियम सिखाता है कि मसीह पाप और मृत्यु को हराता है। अपने पहले आगमन में परमेश्वर का पराक्रमी योद्धा होकर मसीह ने इस हार के अंतिम चरण की शुरुआत की। कलीसिया आत्मिक युद्ध में परमेश्वर के सारे हथियार को पहन कर उसकी सेना के रूप में अब मसीह का अनुसरण करती है। और जब वह महिमा में वापस आता है, तो परमेश्वर के शत्रुओं के खिलाफ मसीह अपने लौकिक युद्ध को पूरा करेगा।

इसके अलावा, निर्गमन में, इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में परमेश्वर से प्राप्त अपनी विरासत के लिए जा रहे थे। पूरे संसार भर में परमेश्वर के शासन को फैलने की दिशा में यह उनका पहला कदम था। नया नियम सिखाता है कि मसीही लोग मसीह में अपनी विरासत को पाते हैं। मसीह ने स्वयं अपने राज्य के उद्घाटन में अपनी विरासत को हासिल किया। मसीही होने के नाते, आज हम पवित्र आत्मा में अपनी विरासत के अग्रिम भुगतान का आनंद लेना जारी रखते हैं। और जब मसीह वापस लौटता है, तो वह — और उसमें हम — सब चीज़ों को विरासत में पायेंगे।

ये और अन्य व्यापक संबंध स्पष्ट करते हैं कि मूसा के स्थायी अधिकार पर निर्गमन का प्रमुख आकर्षण मसीह में अभी भी हम पर लागू होता है। संक्षेप में, निर्गमन ने अपने मूल श्रोताओं को उनके दिनों में परमेश्वर जो कर रहा था उसके प्रकाश में मूसा के अधिकार के प्रति वफादार बने रहने के लिए बुलाया। और निर्गमन अब हमें उन सभी बातों के प्रकाश में मूसा के प्रति वफादार बने रहने के लिए बुलाता है जिन्हें परमेश्वर ने मसीह में पूरा किया, पूरा कर रहा है, और पूरा करेगा।

अब जबकि हमने निर्गमन की पुस्तक के बारे में कुछ आरंभिक विचारों को स्पर्श कर लिया है, हमें इस पाठ में अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए: पुस्तक की संरचना और सामग्री।

संरचना और सामग्री

निर्गमन की पुस्तक में चालीस अध्याय हैं जिनमें कई अलग-अलग पात्र, सेटिंग्स और घटनाएं शामिल हैं। हम विभिन्न साहित्यिक रूपों को पाते हैं जैसे कहानी, गीत, वंशावली, सूची, व्यवस्थाएं, भाषण, प्राथनाएं और निर्देश। और ये जटिलताएं कई बार पुस्तक के प्रमुख प्रभागों, भागों और छोटे खण्डों में अंतर को मुश्किल बनाते हैं। इसलिए, यह कहना उचित है कि निर्गमन को कई तरीकों से रूप-रेखांकित किया जा सकता है। लेकिन जब हम पुस्तक के वास्तविक उद्देश्य को याद रखते है तो पुस्तक की बुनियादी संरचना और सामग्री को समझ पाना मुश्किल नहीं है।

निर्गमन की पुस्तक के दो मुख्य विभाजन हैं। 1:1–18:27 में, पहला प्रभाग, मूसा और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे से लेकर सीनै पर्वत तक केंद्रित है। 19:1–40:38 में, दूसरा प्रभाग, सीनै पर्वत पर मूसा और इस्राएल की तैयारी की चर्चा करता है।

हम विशेष रूप से देखेंगे कि कैसे ये दो मुख्य विभाजन निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के ऊपर मूसा के स्थायी अधिकार पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। आइए पहले मूसा और मिस्र से सीनै पर्वत तक इस्राएल के छुटकारे के साथ शुरू करते हैं।

मिस्र से छुटकारा (निर्गमन 1:1–18:27)

मूसा और मिस्र से इस्राएल का छुटकारा, इस्राएल के छुटकारे से पहले मूसा के अधिकार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ शुरू होता है। इसे हम निर्गमन 1:1–4:31 में पाते हैं। फिर, 5:1–18:27 में, इस्राएल के छुटकारे के दौरान की घटनाओं पर मूसा केंद्र में है। आइए पहले देखते हैं कि इस्राएल के छुटकारे से पहले की घटनाओं के बारे में निर्गमन हमें क्या बताता है।

छुटकारे से पहले (1:1–4:31)

इस्राएल के छुटकारे से पहले की घटनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे पहले, मूसा का जन्म और परवरिश जो 1:1 में शुरू होता है और 2:10 तक जाता है। इसके बाद, 2:11–4:31 में, हम इस्राएल के ऊपर नेतृत्व करने के लिए मूसा के उत्थान के बारे में पढ़ते हैं। हम मूसा के जन्म और परवरिश की कहानी के साथ शुरू करेंगे।

जन्म और परवरिश (1:1–2:10)। इन पदों ने मूसा के अधिकार के ख़िलाफ़ किसी भी उस आपत्ति के लिए जो उठ सकती थी बोला, क्योंकि मूसा ने अपनी युवा अवस्था को मिस्र के महलों में बिताया। जब कहानी शुरू होती है, इस्राएल की बढ़ती जनसंख्या के कारण फिरौन को विद्रोह का डर सताता है। उसने इस्राएल की जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए तीन धूर्त योजनाओं को तैयार किया। लेकिन उसके द्वारा कठिन प्रसव को लागू करना विफल रहा। जन्म के समय इस्राएली लड़को को मारने के लिए दाइयों को उसकी आज्ञा विफल रही। और सबसे महत्वपूर्ण बात, इस्राएल के लड़कों को नील नदी में डूबाने की उसकी आज्ञा विफल हो गई।

इन सारे प्रकरणों में विडंबना दिखाई देती है। लेकिन सबसे बड़ी विडंबना तब सामने आती है जब फिरौन की अपनी बेटी ने मूसा को नील नदी से बचाकर उसकी अंतिम योजना को विफल कर दिया । फिर 2:10 में, फिरौन की बेटी ने मूसा को यह कहते हुए उसका नाम दिया, "मैंने उसे पानी से बाहर निकाला ।" अब, मिस्री भाषा में, "मूसा" का सीधा अर्थ था "बेटा," जो ज्यादातर लोगों को संकेत देता है कि मूसा शाही दरबार का सदस्य था। लेकिन फिरौन की बेटी ने स्पष्ट रूप से समझाया कि उसने मूसा का नाम इसलिए चुना क्योंकि यह इब्रानी क्रिया מָשָׁה (माशाह) के समान लगता था, जिसका अर्थ है "बाहर निकालना।" इसलिए, वफादार इस्राएलियों के कानों में, मूसा के नाम से यह संकेत नहीं मिलता था कि वह फिरौन का बेटा था। इसके विपरीत, इस्राएलियों को याद दिलाने के द्वारा कि उन्हें नुकसान पहुँचाने की कोशिशें कैसे नाकाम रही थीं, मूसा नाम फिरौन की हंसी उड़ाता था।

नेतृत्व के लिए उत्थान (2:11–4:31)। मिस्र से इस्राएल के छुटकारे से पहले की घटनाओं की कहानी फिर मूसा के जन्म और परवरिश से मुड़कर 2:11–4:31 में इस्राएल के ऊपर नेतृत्व के लिए मूसा के उत्थान के बारे में प्रश्नों तक आती है।

निर्गमन 2:14 में, एक इस्राएल दास मूसा से झगड़ता और पूछता है "किस ने तुझे हम लोगों के पर हाकिम और न्यायी ठहराया?" यह पूरा भाग यह समझाने के द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देता है कि मूसा इस्राएल का आधिकारिक अगुवा कैसे बना। इस्राएली व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर छः चरण वाली

व्यत्यासिका में प्रकट होता है, एक साहित्यिक संरचना जिसमें प्रारंभिक और बाद वाले खंड एक दूसरे के समानांतर होते हैं या संतुलित करते हैं।

सबसे पहले, निर्गमन 2:11-15 में यह समझाने के द्वारा कि मूसा मिस्र से इसलिए भागा क्योंकि उसने एक मिस्री व्यक्ति को इस्राएली दास के बचाव में मार डाला था, मिस्र से मूसा का भागना उसे इस्राएल के अगुवे के रूप में सही ठहराता था।

दूसरा, 2:16-22 में मूसा एक मिद्यानी परिवार के साथ जुड़ जाता है। पद 22 ध्यान देता है कि मूसा के बेटे का नाम "गेर्शोम" था। जैसा कि यह अनुच्छेद समझाता है, यह नाम इब्रानी शब्द גֵּר שָׁם(गेर शाम), के जैसा लगता है, जिसका अर्थ "वहाँ पर एक परदेशी" है। यह नाम संकेत देता था कि मूसा को मिद्यानियों के बीच परदेशी जैसा महसूस हुआ। दूसरे शब्दों में, वह अपने सच्चे इस्राएली पहचान को कभी नहीं भूला।

तीसरा भाग, निर्गमन 2:23-25 में, परमेश्वर द्वारा अपनी वाचा के स्मरण करने का संकेत देता है। इस भाग में, इस्राएली लोगों ने मदद के लिए पुकारा, और परमेश्वर ने इस्राएल के कुलपिताओं को दी अपनी प्रतिज्ञा को स्मरण करने के द्वारा जवाब दिया।

चौथा भाग पिछले वाले भाग से मेल खाता है। अध्याय 3:1–4:17, जलती हुई झाड़ी पर मूसा के लिए परमेश्वर के महान कार्य के बारे में बताता है। यहाँ, मूसा के नेतृत्व को इस तथ्य के द्वारा उचित ठहराया गया कि परमेश्वर ने मूसा को बुलाने के द्वारा इस्राएल को मिस्र से बाहर लाने और प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाने के लिए इस्राएल के कुलपिताओं के साथ अपनी वाचा को स्मरण किया।

पाँचवा भाग, निर्गमन 4:18-26 में, मूसा द्वारा अपने मिद्यानी परिवार के साथ समय व्यतीत करने के दूसरे भाग के साथ मेल खाता है। यह भाग मूसा के अपने मिद्यानी परिवार से दूर जाने का वर्णन करता है। यह अनुच्छेद फिर से गेर्शोम पर ध्यान-केंद्रित करता है क्योंकि मूसा उसका खतना करने में विफल रहा। इस भाग में, परमेश्वर ने उत्पत्ति 17:10-14 में अब्राहम के साथ अपनी वाचा के अनुरूप मूसा को मारने की धमकी दी। लेकिन इस घटना ने भी मूसा की अगुवाई के लिए परमेश्वर के समर्थन को दिखाया। हम इसे जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने दया के साथ प्रत्युत्तर दिया जब सिपोरा, मूसा की मिद्यानी पत्नी ने गेर्शोम का खतना किया।

और अंततः मिस्र से मूसा के प्रारंभिक वाले भागने के संतुलन में, निर्गमन 4:27-31 मूसा की हारून के साथ मिस्र को लौटने की रिपोर्ट देता है। नेतृत्व के लिए मूसा के उत्थान को यहाँ पर भी उचित ठहराया गया है। 4:31 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी आराधना की क्योंकि उसने मूसा को उनके पास भेजा था।

> उस तरीके को सुनिए, जिसमें हम सब कहानियों को बताते हैं, वह तरीका जिसमें हर कोई कहानी बताता है, उसमें शुरूआत और अंत होता है, उसमें मुख्य कहानी ऊपर चढ़ती है, और फिर मुख्य कहानी नीचे उतरती है, और वह सममित संरचना बनती है...इसलिए हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब हम बाइबल की कहानियों में इस प्रकार के सममित संरचना को पाते हैं। तथ्य की सच्चाई यह है कि, यही वह बात है जिसे हम बाइबल की कहानियों में पाने की अपेक्षा करेंगे। बाइबल की कहानी बताने वाले, बाइबल के कथाकार अपनी सामग्री को गढ़ नहीं रहे हैं। वे अपनी सामग्री का इस तरह से कलात्मकता के साथ कार्य करने के लिए हेरफेर नहीं कर रहे हैं; यह सिर्फ ऐसा तरीका है जिससे हम कहानियों को बताते हैं और इसे पाने की हम अपेक्षा करेंगे। इसे पाने की अपेक्षा करते हुए, यह जानते हुए कि कहानी का कथानक कैसे काम करता है, हमें इस संबंध में ऐसा उपकरण देता है कि किस बात का इंतजार करना है और किस बात की अपेक्षा करनी है।
>
> डॉ. गॉर्डन एच. जॉनसन

अब जबकि हम ने मूसा और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे को इस्राएल के छुटकार से पहले वाले समय को देख लिया है, हमें निर्गमन 5:1–18:27 में इस्राएल के छुटकारे के दौरान मूसा की गतिविधियों की ओर मुड़ना चाहिए।

छुटकारे के दौरान (5:1–18:27)

इस्राएल के छुटकारे के दौरान मूसा की गतिविधियाँ मिस्र में उसके समय के साथ शुरू होती हैं, जो कि निर्गमन 5:1–13:16 में पाई जाती हैं। इसके बाद हम निर्गमन 13:17–18:27 में मिस्र से सीनै पर्वत तक कूच में मूसा के नेतृत्व के बारे में पढ़ते हैं। आइए मिस्र में मूसा के समय की ओर देखते हैं।

मिस्र में (5:1–13:16)। मिस्र में मूसा के समय ने उन आपत्तियों का जवाब दिया जो मूसा के खिलाफ उठी होंगी क्योंकि मिस्र में उसके शुरूआती कोशिश ने अनजाने में इस्राएलियों के दुःख को बढ़ाया था।

5:1–6:27 में, हम दो समानांतर दृश्यों को पढ़ते हैं, जिन दोनों में मूसा के नेतृत्व का इस्राएल द्वारा अस्वीकार किया जाना, मूसा का शोक करना, और परमेश्वर का फिर से आश्वासन दिया जाना शामिल है। पहला दृश्य 5:1–6:8 में प्रकट होता है। इस्राएलियों ने फिरौन को उनके खिलाफ भड़काने के लिए मूसा को अस्वीकार कर दिया। मूसा दीन बन कर शोक करता है। और इस्राएल का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर ने अपनी बुलाहट के बारे में उसे फिर से आश्वस्त किया।

दूसरा दृश्य, 6:9-27 में, इसी तरह के पैटर्न का अनुसरण करता है। लेकिन इस्राएल द्वारा मूसा का दूसरी बार तिरस्कार, और मूसा के दूसरे शोक के बाद, परमेश्वर का फिर से आश्वासन एक वंशावली के रूप में आता है। अध्याय 6:13-27 मूसा और हारून के वंशजों को उनके पूर्वज लेवी से लेकर हारून के पोते पिनहास तक वर्णन करता है। लेवी, बेशक, इस्राएल के बारह कुलपिताओं में से एक था। और पिनहास ने, गिनती 25 और 31 के अनुसार, दूसरी पीढ़ी के दिनों में परमेश्वर के प्रति वफादारी से सेवा करने में इस्राएलियों का नेतृत्व किया। यहाँ, परमेश्वर ने दूसरी पीढ़ी को फिर से आश्वस्त किया कि मूसा और हारून सच्चे इस्राएली थे जो याकूब के गोत्रों के वंशज थे। और पिनहास में, वे मूसा और हारून की वफादार विरासत को चश्मदीद गवाह होकर देख सकते थे और आश्वस्त हो सकते थे कि इन लोगों को नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर ने बुलाया था।

यह हमें मिस्र में मूसा की गतिविधियों के दूसरे मुख्य भाग पर लाता है: निर्गमन 6:28–13:16 में मिस्र पर परमेश्वर के चमत्कारी दंड। इन अध्यायों ने मिस्री लोगों के ख़िलाफ़ परमेश्वर के अलौकिक कार्यों में निभाई गई मूसा की महत्वपूर्ण भूमिका की ओर इशारा करते हुए मूसा के अधिकार को उचित ठहराया।

सांपों का शुरूआती दंड 6:28–7:13 में प्रकट होता है। हारून की छड़ी चमत्कारिक रूप से सांप में बदल गई और फिरौन के जादूगरों द्वारा बनाए गए सांपों को निगल कर इसने मिस्र के ऊपर परमेश्वर की शक्ति को दिखाया। इस शुरूआती चमत्कार के बाद, निर्गमन 7:14–10:29 में नौ दंडों की एक श्रृंखला दिखाई देती है। ये नौ दंड तीन श्रृंखलाओं में समान रूप से विभाजित होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की शुरूआत नील नदी पर मूसा द्वारा फिरौन का सामना करने से होती है।

पहली श्रृंखला 7:14–8:19 तक चलती है। इसमें जल को लहू में बदलना, देश को मेंढकों से भरना, और धूल से कुटकियों का उठना शामिल है। दूसरी श्रृंखला 8:20–9:12 में चलती है और इसमें मक्खियों से महामरी शामिल है, मिस्र के पशुधन पर महामारी, फोड़े और फफोलों की महामारी। तीसरी श्रृंखला 9:13–10:29 तक चलती है। इसमें ओले, टिड्डियाँ और अंधकार शामिल है। इन सभी चमत्कारी दंडों में मूसा की महत्वपूर्ण भूमिका ने इस्राएल के अगुवे के रूप में उसके अधिकार को उचित ठहराया। अंत में, फसह का अंतिम दंड इस भाग को 11:1–13:16 में बंद करता है। जब मिस्र में परमेश्वर ने सभी पहिलौठे बेटों को मार डाला, तो आखिरकार फिरौन ने इस्राएल को जाने दिया।

मिस्र में हुए इस्राएल के छुटकारे के दौरान की घटनाओं को देख लेने के बाद, हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें परमेश्वर ने निर्गमन 13:17–18:27 में मिस्र से सीनै पर्वत तक के कूच में भी मूसा के अधिकार को उचित ठहराया।

कूच में (13:17–18:27)। अब, उन सभी परेशानियों के बावजूद जिनका अनुभव इस्राएल ने सीनै तक के कूच में किया, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इस्राएल ने मिस्र को बिना तैयारी के नहीं छोड़ा था। निर्गमन 13:18 हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि इस्राएली लोग "पांति बान्धे हुए" मिस्र से निकल गए। इस सैन्य विषय के प्रकाश में, दूसरे देशों के साथ लड़ाई, और इस्राएल की सेना के लिए पानी और भोजन की जरूरत के लिए इस पूरे भाग की विशेषता रही है।

युद्ध जैसे पांति बान्धे हुए इस्राएल का कूच चार मुख्य भागों में विभाजित होता है। सबसे पहला भाग 13:17–15:21 में समुद्र पर मूसा के अधिकार की पुष्टि के साथ चर्चा करता है। निर्गमन 14:31 में, जब इस्राएल ने समुद्र को सूखी भूमि पर से पार किया था, तो हम मूसा की इस पुष्टि को पढ़ते हैं:

> **लोगों ने यहोवा का भय माना और यहोवा पर और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया (निर्गमन 14:31)।**

यह पद बलपूर्वक इस भाग के मुख्य बिन्दुओं को प्रस्तुत करता है। इस्राएल की सेना ने "यहोवा का भय माना और अपना भरोसा उस पर रखा।" और उन्होंने "मूसा उसके दास पर" भी अपने भरोसे को रखा। बेशक, यह संदेश निर्गमन के मूल श्रोताओं के लिए स्वाभाविक था। उन्हें भी अपने दिनों में परमेश्वर और मूसा पर भरोसा रखना था।

इसके बाद, 15:22-27 में इस्राएल की सेना ने शूर के रेगिस्तान की ओर कूच किया। शूर के रेगिस्तान में, मूसा के ख़िलाफ़ बकझक करने के द्वारा लोगों ने मूसा के अधिकार को चुनौती दी क्योंकि जो पानी उसने ढूँढा था वह पीने योग्य नहीं था। इसलिए, परमेश्वर ने पानी को ठीक करने वाली लकड़ी का एक टुकड़ा प्रदान करके मूसा को इस्राएल के अगुवे के रूप में ऊँचा उठाया।

तीसरे भाग में, इस्राएली लोग 16:1-36 में सीन के रेगिस्तान में पहुँचे। सीन के रेगिस्तान में, मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बड़बड़ाने के द्वारा इस्राएली लोगों ने फिर से मूसा के नेतृत्व को चुनौती दी। इस समय तक, पद 7 में, मूसा ने जोर देकर कहा कि वे वास्तव में परमेश्वर के ख़िलाफ़ बड़बड़ा रहे थे। और परमेश्वर ने इस्राएल को खाने के लिए बटेर देने के द्वारा और उन्हें नियमित रूप से मन्ना देने के द्वारा मूसा को प्रमाणित किया।

> परमेश्वर ने जंगल में लोगों की जरूरतों को पूरा करने के द्वारा मूसा के अधिकार को प्रमाणित किया। यद्यपि वे मूसा और परमेश्वर के खिलाफ बड़बड़ाये, परमेश्वर अनुग्रहकारी होकर उन्हें चट्टान से पानी पिलाता है, वह उन्हें स्वर्ग से मन्ना देता है, और यह सब उनके लिए एक पिता वाली देखभाल के कारण ही नहीं था, बल्कि यह प्रमाणित करने के लिए भी कि मूसा वास्तव में वह व्यक्ति था जिसे उसने भेजा...हम लोग अकसर, मसीही होने के नाते, एक मनुष्य पर विश्वास करने के बारे में नहीं सोचते हैं, अपने विश्वास को व्यक्ति पर रखना, लेकिन यहाँ ऐसा प्रकरण है जहाँ लोगों को वास्तव में अपना विश्वास, न केवल यहोवा पर, बल्कि इस प्रकरण में यहोवा के साधन और एजेंट मूसा पर भी रखने के लिए बुलाया गया। हमने इसे लाल समुद्र के किनारे पर भी देखा, जब परमेश्वर ने मिस्र की सेनाओं पर समुद्र से गुजरते हुए अपनी शक्तिशाली विजय को प्राप्त किया था। फिर समुद्र के दूसरे किनारे पर, लिखा है कि लोग आनंदित हुए और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की, और उन्होंने परमेश्वर पर और मूसा पर अपने विश्वास को रखा।
>
> — प्रो. थॉमस ऐगर

चौथा और अंतिम स्थान जिसके लिए इस्राएल ने कूच किया वह निर्गमन 17:1–18:27 में रपीदीम था। यह अपेक्षाकृत लंबा भाग तीन प्रकरणों में विभाजित होता है। सबसे पहले, निर्गमन 17:1-7 में, लोगों ने परमेश्वर की परीक्षा की जब फिर से उन्होंने पानी के बारे में बुड़बुड़ाया। जवाब में, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह अपने साथ प्राचीनों को सीनै पर्वत पर ले जाए। वहाँ, परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान पर मारने का निर्देश दिया और पानी निकल आया। फिर भी, इस चमत्कार के बावजूद, इस्राएली लोगों परमेश्वर के साथ और भी ज्यादा झगड़ने लगे। पद 7 में उन्होंने उपेक्षापूर्ण रीति से आश्चर्य व्यक्त किया "क्या परमेश्वर हमारे बीच है कि नहीं?" अगले दो प्रकरणों ने मामले को शांत किया।

अब, यह समझने के लिए कि कैसे इन प्रकरणों ने प्रश्नों का जवाब दिया, हमें कुछ बातों को जिसे इस्राएली लोग अच्छी तरह से जानते थे याद रखने की जरूरत है। उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वह उन सब को आशीषित करेगा जो इस्राएल को आशीष देंगे और उन सब को शाप देगा जो उन्हें शाप देंगे। इसलिए, इस प्रतिज्ञा के संदर्भ में, निर्गमन 17:8-16 में, जब अमालेकियों ने इस्राएल पर हमला किया, तो परमेश्वर ने उन्हें पराजित किया और अमालेकियों को शाप दिया।

और इस भाग के अंतिम प्रकरण में, 18:1-27 में, यित्रो मूसा के पास शांति में आता है। क्योंकि यित्रो ने इस्राएलियों को आशीष दी, यित्रो को परमेश्वर द्वारा आशीषित किया गया। ये दो घटनाएं बिना किसी शंका के दिखाते हैं कि परमेश्वर इस्राएलियों के साथ में था जैसा कि उसने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी। जैसे-जैसे इस्राएल की सेना ने मूसा का अनुसरण किया, उन्हें परमेश्वर की शक्तिशाली उपस्थिति का संरक्षण प्राप्त हुआ।

अभी तक, हमने देखा कि निर्गमन की संरचना और सामग्री मिस्र से लेकर सीनै पर्वत तक कैसे पहले मूसा और इस्राएल के छुटकारे पर ध्यान केंद्रित करते हुए मूसा के अधिकार से संबंधित है। अब हमें निर्गमन 19:1–40:38 में पुस्तक के दूसरे भाग की ओर मुड़ना चाहिए। ये अध्याय मूसा और इस्राएल द्वारा सीनै पर्वत पर कनान की तैयारी के लिए मुड़ने के द्वारा मूसा के अधिकार को दिखाते हैं।

कनान के लिए तैयारी (निर्गमन 19:1–40:38)

बाइबल के ज्यादातर छात्र इस बात से परिचित हैं कि जब वे सीनै पर्वत की तली पर डेरा डाले थे तो मूसा और इस्राएलियों के साथ क्या हुआ — कैसे परमेश्वर ने उन्हें अपनी व्यवस्था और अपना मिलाप का तम्बू दिया। लेकिन निर्गमन हमें कवल कुछ ही बातों को बताता है जो वास्तव में वहाँ हुई थी। हम इसे जानते हैं क्योंकि लैव्यवस्था हमें कई अन्य बातों को बताती है जो उस समय घटित हुई। इस कारण से, हम जानते हैं कि ये अध्याय अत्यधिक चयनित हैं। इन घटनाओं पर कुछ दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने के लिए इन्हें डिजाइन किया गया था। और जैसा कि हम देखेंगे, वे विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि कैसे परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा के अधिकार को प्रदर्शित किया।

कनान के लिए मूसा और इस्राएल की तैयारी दो मुख्य भागों में विभाजित होती है। पहला भाग निर्गमन 19:1–24:11 में दिखाई देता है और मूसा के अधिकार एवं इस्राएल की वाचा पर चर्चा करता है। दूसरा भाग, 24:12–40:38 में, मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू पर जोर डालता है। आइए इस्राएल की वाचा की ओर देखते हैं।

इस्राएल की वाचा (19:1–24:11)

अब, इस्राएल की वाचा का अभिलेख निर्गमन के मूल श्रोताओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न का जवाब देता है। निर्गमन की दूसरी पीढ़ी को वाचा की व्यवस्था के अधीन क्यों रहना चाहिए जिसे उनके पूर्वजों ने सीनै पर्वत पर मूसा से प्राप्त किया था? उन्हें अलग मार्ग का अनुसरण क्यों नहीं करना चाहिए?

इस्राएल की वाचा के लिए समर्पित ये अध्याय इस प्रश्न का जवाब चार चरणों में देते हैं। सबसे पहले, निर्गमन 19:1 से लेकर पद 8 की शुरूआत तक, हम परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचा के आरंभ को पाते हैं।

वाचा की शुरूआत (19:1-8क) ये पद मूसा की वाचा की बुनियादी शर्तों को बताते हैं: परमेश्वर ने इस्राएली लोगों को भलाई दिखाई थी; उसने उनसे वफादारी की माँग की; यदि वे उसकी आज्ञा मानेंगे तो आशीषित किए जाएंगे। निर्गमन 19:8 इस्राएल के जोश भरे और सर्वसम्मत जवाब के साथ बंद होता है: "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे।" और बेशक, बात स्पष्ट थी; निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं को अपने पूर्वजों का अनुकरण करना चाहिए। उन्हें वैसे ही उत्साह के साथ मूसा के माध्यम से परमेश्वर की वाचा के लिए फिर से समर्पित होना चाहिए।

मूसा पर इस्राएल का विश्वास (19:8ख–20:20)। मूसा के अधिकार एवं इस्राएल की वाचा का दूसरा चरण परमेश्वर की वाचा के बिचवई के रूप में मूसा के ऊपर इस्राएल के विश्वास पर ध्यान केंद्रित करता है। यह निर्गमन 19 में पद 8 के दूसरे हिस्से से शुरू होता है और 20:20 तक चलता है। आपको याद होगा कि निर्गमन 19:9 में, परमेश्वर ने मूसा से यह प्रतिज्ञा की थी:

> **मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिए कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें और सदा तुझ पर विश्वास करें (निर्गमन 19:9)।**

यहाँ ध्यान दें कि परमेश्वर ने कहा कि वह सीनै पर्वत पर प्रकट होगा और मूसा के साथ बातें करेगा ताकि "वे लोग ... सदा [मूसा] पर विश्वास [करेंगे]।" तब जो दृश्य सामने आते हैं वे बताते हैं कि कैसे परमेश्वर ने इस प्रतिज्ञा को पूरा किया।

इस चरण के मुख्य निकाय में परमेश्वर के निर्देश, मूसा की आज्ञाकारिता, और परमेश्वर द्वारा ईश-दर्शन की दो समांनातर श्रृंखलाएँ शामिल हैं। पहली श्रृंखला 19:10-19 में प्रगट होती है जहाँ परमेश्वर के साथ मिलने के लिए इस्राएल को तैयार करने हेतु परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया। मूसा ने परमेश्वर के निर्देश का पालन किया, और इसका परिणाम सीनै पर्वत पर नाटकीय ईश-दर्शन था — वहाँ पर परमेश्वर की उपस्थिति का महिमामय, दृश्यमान एवं सुनाई देने वाली अभिव्यक्ति।

फिर, निर्गमन 19:20-25 में हम दूसरी श्रृंखला को पढ़ते हैं। लोगों को फिर से तैयार करने के लिए परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया, और मूसा ने आज्ञा मानी। परिणामस्वरूप, 20:1-17 में, कहानी फिर सीनै पर्वत पर ईश-दर्शन को लौटती है जहाँ परमेश्वर ने पूरे इस्राएल के सुनने के लिए दस आज्ञाओं को बोला।

इस भाग के शुरूआती खंड में परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साथ संतुलन में, निर्गमन 20:18-20 बताता है कि मूसा के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हुई थी। ये पद दर्शाते हैं कि कैसे पहाड़ से परमेश्वर की आवाज़ सुनने के बाद, इस्राएली लोग इतने भयभीत थे कि उन्होंने परमेश्वर से उनके साथ सीधे बोलने को बंद करने के लिए कहा। उन्होंने मूसा से परमेश्वर के स्थान पर उनसे बोलने की विनती की। दूसरी पीढ़ी के लिए इस विनती के निहितार्थ बहुत स्पष्ट हैं। उनके अपने पूर्वजों ने परमेश्वर की वाचा वाली व्यवस्था के बिचवई के रूप में मूसा की ओर देखा था और उन्हें भी ऐसा ही होना चाहिए।

मूसा की वाचा वाली व्यवस्था (20:21–23:33)। मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा पर इस भाग में तीसरा चरण निर्गमन 20:21–23:33 में पाया जाता है। ये अध्याय मूसा की वाचा वाली व्यवस्था की सामग्री को प्रस्तुत करते हैं। यह ध्यान देने के द्वारा कि स्वयं परमेश्वर ने इस्राएल को व्यवस्था देने के लिए मूसा को आज्ञा दी थी, यह पूरा चरण मूसा के अधिकार को उचित ठहराता है।

इस चरण को 20:21-26 में पेश किया गया है। यहाँ पर, आराधना के लिए उसके नियमों को इस्राएल को बताने के लिए परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया — मूर्तियों और वेदियों पर निर्देश। ये पद मुख्य रूप से दस आज्ञाओं की पहली दो को सविस्तार से समझाते हैं। इसके बाद, 21:1–23:33 में वाचा की पुस्तक की सामग्री को इस्राएल को बताने के लिए परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया।

यह समझने के लिए कि कैसे वाचा की पुस्तक को इस्राएल में कार्य करना था, यह ध्यान रखना जरूरी है कि निर्गमन 21:1 में, परमेश्वर ने वाचा की पुस्तक का विवरण निम्न तरीके से दिया:

> जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे ये हैं (निर्गमन 21:1)।

जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद यहाँ पर "नियम" किया गया वह है הַמִּשְׁפָּטִים(हम्मीशपाटिम) । इस शब्द का अर्थ "कानूनी नियम" या जिसे हम कह सकते हैं "मुक़दमें के नियम।" वाचा की पुस्तक के लिए यह पदनाम हमें मूसा के माध्यम से परमेश्वर के दोगुनी वाचा वाले नियम की ओर एक स्पष्ट अभिविन्यास देता है। अनिवार्य रूप से, दस आज्ञाएं इस्राएल में वैधानिक नियमों, या सामान्य कानूनी सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं। और वाचा की पुस्तक ने कई तरह के विषयों पर कानूनी मापदंडों को पेश किया जिनका पालन इस्राएल के न्यायाधीशों को करना था। इनमें से कई मापदंड कोड ऑफ हम्मुराबी और प्राचीन मध्य पूर्व के अन्य कानूनी संहिताओं में नियमों के सदृश्य हैं। इन संहिताओं और वाचा की पुस्तक को उनके देश की अदालतों में लागू करने के लिए न्यायाधीशों के लिए डिजाइन किया गया था।

> वाचा की पुस्तक के समानांतर कई अन्य कानूनी संहिताएं हैं जो कि हमारे पास प्राचीन मध्य पूर्व में तीसरी सहस्राब्दी के अंत से दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक में है। यह इस मायने में भिन्न है कि यह एक वाचा के संदर्भ में है। इनमें सबसे प्रसिद्ध हम्मुराबी कोड है, इन कानूनी संहिताओं में सबसे ज्यादा विस्तृत...जिस तरीके से नियमों को बनाया गया है वह है "यदि-फिर" तरीका — जिसमें "फिर" बहुदा परिस्थिति के लिए नागरिक अधिकार प्रदान करता है — यह जिस तरीके से निर्गमन 21:1 से लेकर, मैं सोचता हूँ लगभग 22:16 तक बनाए गए नियमों के बहुत समान है, मैं सोचता हूँ, कि "यदि-फिर" संरचना के प्रकार में, जिसे अंतर्विवेक रूप कहा गया है, एक मामला-सम्मन विधि रूप। जब हम वास्तविक विवरणों में जाते हैं, तो प्राचीन इस्राएली समाज और प्राचीन बाबुल के समाज, कहने के लिए, मेसोपोटामिया में एक शहर-राज्य के बीच में भिन्नताएं, बहुत अलग हैं। बाबुल के समान, बेबीलोन में शहर-राज्य, एक बहुत ही स्तरीकृत समाज है, जिसमें स्वतंत्र व्यक्ति, स्वतंत्र रूप से जन्मे व्यक्ति और आमजन एक दूसरे स्तर पर हैं, और फिर गुलाम। इस समाज में विभिन्न आर्थिक भूमिकाओं के साथ एक बहुत ही अलग वाली अर्थव्यवस्था है। एक शक्तिशाली मंदिर परिसर है जो पूरी अर्थव्यवस्था को चलाता है। महल, शाही महल समाज की संरचना में एक प्रमुख कारक है। और यह लगभग एक सामंती समाज की तरह है, जैसे कि हम मध्यकालीन सामंती समाज में उसके बारे में सोचते हैं। इस्राएली समाज बहुत अधिक समतावादी है, आधुनिक व्यक्तिवादी अर्थों में नहीं, बल्कि यह एक कृषि अर्थव्यवस्था पर आधारित और भूमि-धारण नियमावली के लिए एक जनजातीय संगठन है। इसलिए, भिन्नता समान नहीं है, कहने के लिए, जैसा कि हम हम्मुराबी के कोड में पाते हैं यहाँ समान सामाजिक स्तरीकरण नहीं है।
>
> — डॉ. डगलस ग्रोप

वाचा की संपुष्टि (24:1-11)। मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा के चौथे और अंतिम चरण में, निर्गमन 24:1-11 वाचा की संपुष्टि को रिकॉर्ड करता है। यह चौथे चरण निर्गमन 19:1 से लेकर पद 8 की शुरूआत में वाचा के आरंभ में जो शुरू हुआ था उसे पूरा करता है। विशेष रूप से ध्यान दें कि निर्गमन 24:3 और 7 दोनों 19:8 की प्रतिध्वनि देते हैं जहाँ इस्राएल ने उन सभी कार्यों को करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी।

इसके अलावा, इस चरण का अंतिम दृश्य बताता है कि कैसे इस्राएल के अगुवे सीनै पर्वत पर चढ़े, परमेश्वर को देखा, और उसके साथ अद्भुत सामंजस्य में खाया और पिया। परमेश्वर के साथ शांति और सामंजस्य के इस दृश्य के आश्चर्य को किसी भी झिझक को दूर करने के लिए डिजाइन किया गया था जो कि निर्गमन के मूल श्रोताओं को हो सकता था। वे परमेश्वर के साथ शांति और सामंजस्य का अनुभव किस तरह से कर सकते थे? अपने दिनों में मूसा के माध्यम से परमेश्वर की वाचा वाली व्यवस्था के स्थायी अधिकार को सिर्फ मानने के द्वारा।

अब जबकि हमने निर्गमन 19:1–24:11 में इस्राएल की वाचा को देखने के द्वारा सीनै पर्वत पर कनान के लिए मूसा और इस्राएल की तैयारी का पता लगा लिया है, हमें निर्गमन के आखिरी मुख्य फोकस की ओर मुड़ना चाहिए। मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू पर जोर जो कि निर्गमन 24:12–40:38 में दिखाई देता है। परमेश्वर के मिलाप वाले तम्बू को स्थापित करने में जिस प्रमुख भूमिका को मूसा ने निभाया था, ये अध्याय उस पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा मूसा के स्थायी अधिकार का समर्थन करते हैं।

इस्राएल का मिलाप वाला तम्बू (24:12–40:38)

बाइबल के ज्यादातर छात्र इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू को आराधना के लिए एक गिरजा घर से थोड़ा ज्यादा ही समझते हैं, लेकिन हाल के पुरातात्विक खोजों से यह दृढ़ता से पता चलता है कि यह इससे कहीं अधिक था। यह प्राचीन मिस्र में फिरौन के लिए अपनी सेनाओं के साथ लड़ाई के लिए बाहर जाने का रिवाज था। जब वे जाते थे, तो वे बहुत बड़े तम्बू वाली संरचना में रहते थे, जैसे कि एक चलने वाले महल के समान। इन शाही युद्ध के तम्बूओं में आंगन से घिरा हुआ आंतरिक और बाहरी कमरे शामिल होते थे। इन तम्बूओं में, सेनाएँ अपने राजा को श्रद्धा-सुमन देती थीं और राजा से निर्देश प्राप्त करती थीं। इन्हीं के समान, निर्गमन परमेश्वर के मिलाप वाले तम्बू को आराधना के लिए एक गिरजा घर से बढ़कर प्रस्तुत करता है। यह उसका शाही युद्ध वाला तम्बू था। और इस तरह, यह वह स्थान था जहाँ इस्राएल की सेना ने अपने ईश्वरीय राजा को श्रद्धा-सुमन अर्पण किया और जहाँ इस्राएल के ईश्वरीय राजा ने इस्राएल की सेना के लिए अपने निर्देशों को उजागर किया।

मिलाप वाले तम्बू के लिए निर्देश (24:12–31:18)। मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू का अभिलेख तीन मुख्य भागों में विभाजित होता है। सबसे पहले, निर्गमन 24:12–31:18 में मिलाप वाले तम्बू के लिए मूसा को दिए गए परमेश्वर के निर्देश शामिल हैं। मिलाप वाले तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देश निर्गमन 24:12-18 में पत्थर की तख्ती पर दस आज्ञाओं को प्राप्त करने हेतु मूसा के लिए परमेश्वर की बुलाहट के साथ शुरू होते हैं। फिर मिलाप वाले तम्बू के लिए परमेश्वर के विशेष निर्देश 25:1–31:17 में प्रकट होते हैं। ये निर्देश मिलाप वाले तम्बू की सजावट एवं वास्तुकला का विस्तृत विवरण देते हैं। परमेश्वर ने याजकों, कारीगरों, और कुशल मजदूरों के लिए निर्देशों के साथ मिलाप वाले तम्बू की रीतियों एवं कर्मियों के लिए भी दिशानिर्देशों को निर्धारित किया। और उसने साप्ताहिक सब्त के संबंध में प्रत्यक्ष निर्देश दिए। इन विवरणों की संख्या और विस्तार परमेश्वर के शाही युद्ध वाले तम्बू में कुछ विशेष स्वीकृत व्यवहार निभाने के महत्व को दर्शाते हैं। फिर निर्देशों के इस मुख्य हिस्से के बाद, हम निर्गमन 31:18 में दस आज्ञाओं वाले पत्थर की तख्तियों का मूसा द्वारा सफलतापूर्वक प्राप्त करने को पाते हैं। यह मिलाप वाले तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देशों के अंत का निशान है।

अब, इस भाग में कई समयों पर, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से इस तथ्य की ओर इशारा किया कि उसके नियम सिर्फ उन इस्राएलियों के लिए ही नहीं थे जो सीनै पर्वत पर थे। वे निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं के लिए भी थे। निर्गमन 27:21; 28:43; 29:9 और 42; 30:21; और 31:16, जैसे स्थानों पर, परमेश्वर ने इस वाक्यांश को कई बदलावों के साथ इस्तेमाल किया, "आने वाले वंश के लिए सदा की विधि ठहरे।" इसने संकेत दिया कि कैसे मिलाप वाले तम्बू के लिए उसके निर्देशों के विभिन्न पहलूओं को भविष्य की पीढ़ियों को मानना था। बेशक, मूल श्रोताओं के लिए इन अधिसूचनाओं का अर्थ स्पष्ट था। उन्हें स्वयं अपने दिनों में भी मिलाप वाले तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना था।

> विशेष रूप से तकनीक में जिस तरीके से मिलाप वाले तम्बू को खड़ा किया जाता है उसमें कई समानताएं हैं जैसा कि यह निर्गमन की पुस्तक में वर्णित है, कैसे इसको डंडों और स्टैंड के साथ खड़ा किया और फिर उतार कर ले जाया जा सकता है आदि, ताकि यह प्रभावकारी रूप से चलता-फिरता बन जाए। कई अलग-अलग समयों में मिस्र में इसके जैसे समानताएं हैं, लेकिन सबसे उत्कृष्ट समानांतर अबु सिम्बल मंदिर में कादेश की उसकी लड़ाई में रामसेस II की नक्काशी है, जो कादेश की इस लड़ाई की स्मृति में है, जिसको जीतने का दावा उसने किया, लेकिन कई विद्वान मानते हैं कि वह, किसी तरह से, भाग्यशाली था कि वह जीवित बच निकला था। लेकिन अबु सिम्बल की दीवार पर एक नक्काशी है जो उसके अपने तम्बू, उसके युद्ध वाले तम्बू को दिखाती है, और मिलाप वाले तम्बू के समान एक वर्गाकार आंतरिक कमरे के जैसे ही इसके आयाम भी सटीक हैं, जो कि उसके सिहासंन का कमरा रहा होगा, और फिर एक लंबा दालान, जो भीतरी कमरे से दोगुना लंबा था, और उसके बाहर एक आयताकार दरबार है, बहुत कुछ मिलाप वाले तम्बू के चारों ओर वाले आयताकार दरबार के समान। इसके अलावा, हम इस नक्काशी में देख सकते हैं कि उसकी सेना के चारों विभाग उसके शिविर के चारों ओर रखे गए हैं, बहुत कुछ जैसा कि गिनती की पुस्तक में वर्णित है। मिलाप वाला तम्बू पहले लेवियों द्वारा और फिर तीन गोत्रों के चार सेट के द्वारा सभी चारों दिशाओं में घिरा हुआ है।
>
> — डॉ. डगलस ग्रोप

विफलता और नवीकरण (32:1-34:35)। मिलाप वाले तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देशों के बाद, मूसा ने निर्गमन 32:1–34:35 में सीनै पर्वत की तली पर इस्राएल की विफलता और नवीकरण का वर्णन किया। ये अध्याय तीन मुख्य चरणों में विभाजित होते हैं। 32:1-35 में, सीनै पर्वत पर सुनहरे बछड़े की पूजा करने के द्वारा परमेश्वर के साथ इस्राएलियों की वाचा को तोड़ने के बारे में हम पढ़ते हैं। ये अध्याय मूसा के अधिकार को सिद्ध करते हैं क्योंकि मूसा ने अपने आप को निकटता से इस्राएल के साथ पहचाना और उसके लिए प्रार्थना की। अपने जीवन के जोखिम पर, मूसा ने मध्यस्था की और इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को पाया। और परमेश्वर ने देश को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया।

फिर, इस भाग का दूसरा चरण, निर्गमन 33:1-23 में, परमेश्वर की अनुपस्थिति के खतरे की ओर मुड़ता है। देश को तुरंत नष्ट नहीं करने के लिए सहमत होने के बाद, परमेश्वर ने मूसा को आगे बढ़ने की आज्ञा दी। लेकिन परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को हटाने की धमकी दी क्योंकि वह इस्राएल को मार्ग में नष्ट कर सकता है। लेकिन एक बार फिर, मूसा ने स्वयं को देश के साथ पहचाना, इस्राएल की ओर से सफलतापूर्वक प्रार्थना की, और परमेश्वर की अनुपस्थिति के खतरे को दूर किया।

इस भाग के तीसरे चरण, 34:1-35 में, इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का नवीकरण शामिल है। परमेश्वर ने पुष्टि की कि वह अपनी वाचा को नवीनीकृत करके कनान देश की ओर इस्राएल के साथ जाएगा। और यह अध्याय वाचा की नवीकरण के दौरान मूसा के प्रभावकारी प्रार्थनाओं की रिपोर्ट करने के द्वारा मूसा को इस्राएल के अगुवे के रूप में ऊपर उठाता है।

मिलाप वाले तम्बू का पूरा किया जाना (35:1–40:38)। अंत में, मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू वाला भाग निर्गमन 35:1–40:38 में मिलाप वाले तम्बू के पूरे होने के साथ समाप्त होता है। ये अध्याय 35:1-3 में साप्ताहिक सब्त के स्मरणपत्र के साथ शुरू होते हैं। फिर 35:4–39:43 में परमेश्वर ने मूसा को मिलाप वाले तम्बू को बनाने एवं संचालित करने की आज्ञा दी। निर्गमन 40:1-33 मिलाप वाले तम्बू को वास्तव में बनाने को दर्शाता है। इन पदों में विवरण दिखाते हैं कि कैसे मिलाप वाले तम्बू, परमेश्वर का शाही युद्ध वाले तम्बू का बनाया जाना, परमेश्वर के पहले वाले निर्देशों पर पूरी तरह से

खरा उतरा। और यह भाग मिलाप वाले तम्बू के पूरा होने के प्रत्युत्तर में इस्राएल पर परमेश्वर की आशीष के साथ 40:34-38 में समाप्त होता है।

इस्राएल पर परमेश्वर की आशीष का यह अंतिम दृश्य एक बार फिर मूसा के अधिकार पर ध्यान केंद्रित करता है। परमेश्वर के मिलाप वाले तम्बू के सभी स्वीकृत व्यवहारों को मानने के द्वारा इसने मूल श्रोताओं को मूसा के आधीन होने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे भी परमेश्वर की आशीष को प्राप्त कर सकेंगे। निर्गमन 40:36-38, पुस्तक के अंतिम पदों को सुनिए:

> इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था, कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर से उठ जाता तब तब वे कूच करते थे; और यदि वह न उठता, तो जिस दिन तक वह न उठता था — उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे। इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:36-38)।

मूसा ने कनान की ओर इस्राएल की यात्राओं का इस भव्य सार के साथ अपनी पुस्तक को बंद किया। उसने ध्यान दिलाया कि परमेश्वर की उपस्थिति बनी रही क्योंकि पहली पीढ़ी ने मिलाप वाले तम्बू के लिए मूसा के निर्देशों का आज्ञापालन किया। दूसरी पीढ़ी के श्रोता अपनी आँखों से परमेश्वर की भव्य उपस्थिति को देख सकते थे। जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय पाने के लिए आगे बढ़ते हैं और यदि वे अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति को बनाए रखने की आशा करते हैं, तो उन्हें मिलाप वाले तम्बू के मूसा वाले निर्देशो का पालन करना होगा — अपने ईश्वरीय राजा के शाही युद्ध वाले तम्बू के लिए निर्देश।

अब जबकि हमने निर्गमन की पुस्तक के बारे में कुछ आरंभिक विचारों का पता लगा लिया है, हमें इस पाठ में अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए: इस पुस्तक के प्रमुख विषय। निर्गमन में कुछ सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे कौन से हैं जिन्होंने मूल श्रोताओं के जीवनों को प्रभावित किया? और आज मसीह के अनुयायियों के लिए इन प्रमुख विषयों को कैसे लागू किया जाना चाहिए?

प्रमुख विषय

इस पूरे पाठ के दौरान, हम ने बताया कि किस प्रकार निर्गमन की पुस्तक को इस्राएल के ऊपर मूसा के स्थायी अधिकार को उजागर के लिए डिजाइन किया गया था। यह विषय चाहे कितना भी महत्वपूर्ण हो, हमें हमेशा ध्यान में रखना है कि पुस्तक में केवल यही विषय नहीं है। जबकि ये पवित्र शास्त्र मूसा के अधिकार के लिए तर्क बनाते हैं, वे इस प्रमुख, एकीकृत विषय के संबंधित कई अन्य विषयों पर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा ऐसा करते हैं।

> निर्गमन वास्तव में मूसा के अधिकार के अलावा कई सारे विभिन्न विषयों को एक साथ बुनता है ताकि हम इसे कई अलग-अलग तरीकों से सारांशित कर सकें। लेकिन पुस्तक के मुख्य विषयों को सारांशित करने लिए सबसे उपयोगी रणनितियों में से एक यह पता लगाना है कि कैसे यह पुस्तक परमेश्वर के राज्य पर जोर डालती है। अब, यह ऐसा विषय है जो पूरी बाइबल में चलता है, और यहाँ तक कि नए नियम में यह अपनी पूर्णता में पहुँचता है, इसलिए इस पुस्तक में देखने हेतु हमारे लिए यह एक महत्वपूर्ण विषय है। अब, कभी-कभी आधुनिक मसीही लोग निर्गमन के इस पहलू को अनदेखा कर जाते हैं, लेकिन हम सब जानते कि निर्गमन उस की चर्चा करता है जब परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल को साथ मिलाकर एक राष्ट्र को बनाया था, वह समय जब उसने उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश

> में एक राज्य बनने के लिए तैयार किया और बाद में, फिर, पूरे संसार भर में। और इस तरह, पुस्तक में परमेश्वर के राज्य पर इस जोर को हम देख सकते हैं, लेकिन इसे देखने के सबसे अच्छे तरीकों में से एक यह देखना है कि कैसे निर्गमन परमेश्वर के चरित्र का चित्रण करता है। निर्गमन की पुस्तक में परमेश्वर सबसे प्रमुख किरदार है, और इसमें परमेश्वर के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन यह मुख्य रूप से इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर इस्राएल का राजा है।
>
> — डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

निर्गमन पवित्र शास्त्र में पहली ऐसी पुस्तक है जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर को राजा के रूप में संदर्भित करती है। निर्गमन 15:1-18 में, जब इस्राएलियों ने लाल समुद्र को सूखी भूमि से होकर पार किया, तो मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिए गीत गाया। गाने का मुख्य भाग निर्गमन की पहली और दूसरी पीढ़ी के अनुभवों को एक साथ बटोरता है। यह मिस्र से इस्राएल के भूतकाल वाले छुटकारे पर, और साथ में कनान के विजय और उसमें बसने की इस्राएल के भविष्य वाली सफलता पर भी ध्यान आकर्षित करता है। दिलचस्प बात है, कि समुद्र पर मूसा के अंतिम वचनों ने मिस्र से भूतकाल वाले छुटकारे और कनान में भविष्य वाले विजय और बसने, दोनों को एक साथ परमेश्वर की बादशाहत के तहत चित्रित किया। निर्गमन 15:18 को सुनिए जहाँ मूसा ने इन शब्दों के साथ परमेश्वर की अपनी पूरी स्तुति को चित्रित किया:

> **यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा (निर्गमन 15:18)।**

जैसे कि यह पद संकेत देता है, निर्गमन की दोनों पीढ़ियों के लिए परमेश्वर के महान कार्य इस्राएल के ईश्वरीय राजा के रूप में उसकी महिमा को दर्शाते हैं, वह जो "सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।"

इस प्रकाश में, ऐसे चार तरीकों को सोचने के द्वारा, निर्गमन के प्रमुख विषयों को व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी, जिनमें निर्गमन मूसा के दिनों में परमेश्वर के राजा होने पर जोर देता है। सबसे पहले, निर्गमन 1:1–4:31 में हम इस्राएल की वाचा के शाही निभाने वाले के रूप में परमेश्वर का पता लगायेंगे। दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे निर्गमन 5:1–18:27 में इस्राएल के विजयी शाही योद्धा के रूप में निर्गमन परमेश्वर पर कैसे विशेष ध्यान देता है। इसके बाद, हम निर्गमन 19:1–24:11 में शाही वाचा के व्यवस्था देने वाले के रूप में परमेश्वर के विषय को देखेंगे। और अंत में, हम निर्गमन 24:12–40:38 में इस्राएल के वर्तमान योद्धा के रूप में परमेश्वर के विषय पर विचार करेंगे। आइए शाही वाचा के निभाने वाले के रूप में परमेश्वर के साथ शुरू करते हुए, इनमें से प्रत्येक विषय पर विचार करते हैं।

वाचा को निभाने वाला (1:1–4:31)

हालांकि, इस्राएल की वाचा के शाही निभाने वाले के रूप में परमेश्वर का विषय निर्गमन की पूरी पुस्तक में दिखाई देता है, फिर भी इस पर मुख्य रूप से निर्गमन 1:1–4:31 में जोर दिया गया है। ये अध्याय मूसा के जन्म से पहले की घटनाओं से लेकर इस्राएल पर मूसा के नेतृत्व के उत्थान की घटनाओं का पूर्वाभ्यास करते हैं। उदाहरण के लिए निर्गमन 2:24 को सुनिए जहाँ हम पढ़ते हैं:

> **परमेश्वर ने [इस्राएलियों का] कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बाँधी थी, स्मरण किया (निर्गमन 2:24)।**

यह पद महत्वपूर्ण है क्योंकि, एक संक्षिप्त टिप्पणी को छोड़कर कि परमेश्वर ने उन दाइयों को आशीषित किया जो उसका भय मानती थी, यह पहली बार है कि निर्गमन परमेश्वर का उल्लेख करता है। इसलिए, शुरू से ही, निर्गमन ने परमेश्वर को वाचा के शाही निभाने वाले के रूप में चित्रित किया, वह जिसने "अपनी वाचा को स्मरण किया।"

जब कभी पवित्र शास्त्र परमेश्वर और उसकी वाचा का उल्लेख करता है, तो वे स्पष्ट रूप से उस पर इस्राएल के ईश्वरीय राजा के रूप में ध्यान-केंद्रित करते हैं। बाइबल समयों के दौरान, परमेश्वर ने लोगों के साथ वाचा उन तरीकों से बाँधी जो कि प्राचीन मध्य पूर्व में जिस तरह बड़े राजा दूसरे देशों के साथ संधि बनाते थे उसके समान थी। आज, हम अकसर इन अन्तरराष्ट्रिय संधियों को "अधिपति-दास संधि" कहते हैं। इन संधियों में, बड़े राजाओं, या अधिपतियों ने, छोटे राजाओं, या दासों, और उनके देशों के साथ गंभीर व्यवस्था को स्थापित किया। इस्राएली लोग इस बात को समझते थे, इस्राएल की वाचा को वफादारी से निभानेवाला, परमेश्वर उनका ईश्वरीय राजा भी था। और मूसा के दिनों में कार्य करने के द्वारा उसने इस्राएल के कुलपिताओं के साथ अपनी वाचा को पूरा किया। इसलिए, मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा इस्राएल के कुलपिताओं के साथ उसकी पहली वाली वाचा के विपरीत नहीं थी। इसके विपरीत, यह उनके पूरे होने में थी। निर्गमन 3:14-15 में इस पर जोर दिए जाने को सुनिए जहाँ परमेश्वर ने मूसा को अपना नाम बताया।

> **मैं जो हूँ सो हूँ। तू इस्राएलियों से यह कहना: "मैं हूँ, उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है...तुम्हारे पितरों का परमेश्वर — अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर — यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है" (निर्गमन 3:14-15)।**

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था कि मिस्र में रह रहे इस्राएलियों से उसकी पहचान तीन अलग-अलग नामों द्वारा कराना: "मैं जो हूँ सो हूँ," "मैं हूँ," और "यहोवा।"

यह समझने के लिए कि ये नाम वाचा के शाही निभानेवाले के रूप में परमेश्वर से कैसे संबंधित हैं, हमें समझने की जरूरत है कि ये तीनों नाम एक ही इब्रानी क्रिया הָיָה (हायाह) के रूपांतरण हैं। यह शब्द अधिकांश बार "होने के लिए" क्रिया के किसी न किसी रूप के द्वारा अनुवादित होता है। यह देखना आसान है कि "मैं जो हूँ सो हूँ" — या "मैं जो होउँगा वह होउँगा," जैसे इब्रानी का अनुवाद हो सकता है — और इसके संक्षिप्त रूप, "मैं हूँ," या "मैं होउँगा," में इस क्रिया के पहले वचन के रूप शामिल हैं। लेकिन जिस नाम का अनुवाद "यहोवा" किया गया उसे थोड़ा और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

"यहोवा" शब्द तथाकथित ईश्वरीय चार-अक्षर का अनुवाद करता है, परमेश्वर का चार अक्षरों वाला इब्रानी नाम जिसे अक्सर "YHWH" लिखा जाता है। हाल के पुरातात्विक खोजों ने संकेत दिया है कि इस शब्द का उच्चारण "याहवेह" होना चाहिए। यहावेह का अनुवाद अधिकांश बार "प्रभु" किया जाता है। लेकिन यह क्रिया "हायाह" का तीसरा वचन वाला रूप है और इसका अनुवाद "वह है" या "वह होगा" हो सकता है। वास्तव में, इब्रानी भाषा की परंपरा का पालन कर, इसका संभावित अर्थ है "वह होने का कारण है" या "वह होने का कारण होगा।" इन्हीं अर्थों के साथ-साथ, "मैं जो हूँ सो हूँ" का अनुवाद "मैं होने का कारण हूँ जो मैं होने का कारण हूँ" हो सकता है। और "मैं हूँ" का अनुवाद "मैं होने का कारण हूँ" हो सकता है।

इस समझ को सही मानते हुए, इन पदों में याहवेह नाम, और संबंधित नामों ने, प्रत्यक्ष रूप से इस तथ्य की ओर संकेत किया हैं कि परमेश्वर अपनी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का कारण बन रहा था। दूसरे शब्दों में, उन्हें पूरा होने में लाने के द्वारा वह इस्राएल के कुलपिताओं के लिए दी गई अपनी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं को निभा रहा था।

यह देखना कतई मुश्किल नहीं है कि क्यों मूसा ने जोर दिया कि परमेश्वर अपनी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं को विश्वासयोग्यता से पूरा कर रहा था। उत्पत्ति 15:14 में, परमेश्वर ने इस्राएल को एक विदेशी देश में कठिनाई से छुटकारा देने की प्रतिज्ञा की थी। मूसा के श्रोताओं को जानने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर उनके दिनों में इस प्रतिज्ञा को पूरी कर रहा था। उन्हें देखने की आवश्यकता थी कि उनके अतीत, वर्तमान और भविष्य में प्रत्येक आशीष इस कारण थी क्योंकि उनका ईश्वरीय राजा उनके कुलपिताओं के साथ अपनी वाचा को निभा रहा था।

कई मायनों में, मसीह के अनुयायियों के लिए भी यही सच है। हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य में भी परमेश्वर उस वाचा को निभाता है जो उसने इस्राएल के कुलपिताओं के बाँधी थी। लूका 1:68-73 जैसे अनुच्छेद हमें सिखाते हैं कि अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा की निर्णायक परिपूर्णता मसीह के पहले आगमन के दौरान, उसके राज्य के उद्घाटन के समय शुरू हुई। इसके अलावा, गलातियों 3:15-18 जैसे अनुच्छेद हमें बताते हैं कि मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान हमें परमेश्वर पर और अब्राहम को दी गई उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना जारी रखना चाहिए। इसके साथ, रोमियो 4:13 जैसे पद सिखाते हैं कि, मसीह के राज्य की परिपूर्णता के समय, जिस भव्य अनंत पुरस्कार को हम मसीह में प्राप्त करेंगे वह इस्राएल के कुलपिताओं को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति में होगा।

हम लोग मसीह में हैं। मसीह अब्राहम वाली वाचा का वारिस है। और परमेश्वर अब्राहम के साथ अपनी वाचा को निभाने में विफल नहीं होगा। हमारे संसार के लिए निर्गमन में हर एक अनच्छेद से ये और इन्हीं के समान अनुप्रयोग निकलते हैं जो परमेश्वर को इस्राएल की वाचा को निभाने वाले राजा के रूप में प्रकट करते हैं।

> निर्गमन की पुस्तक दिखाती है कि परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति सदा विश्वासयोग्य है, क्योंकि यहाँ तक कि जब इस्राएल के लोगों ने मूसा के ख़िलाफ़ विद्रोह किया और उस बात का सम्मान नहीं किया जो परमेश्वर ने अतीत में उनके साथ किया था, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। परमेश्वर उनके विद्रोहीपन के कारण हार मानने वाला नहीं है, लेकिन उसे उस लक्ष्य को प्राप्त करना था जो उसने उन्हें छुड़ाने के लिए निर्धारित किया था। और यह लक्ष्य जिसे परमेश्वर ने हम सभी के लिए निर्धारित किया है हमें उसके और पास ले जाता है। चाहे हम परमेश्वर से कितनी भी दूर क्यों न चलें जाएं, परमेश्वर कोशिश करता है और परमेश्वर हमें अपने पास खींचता रहता है। चाहे हम कितने भी टूटे हुए क्यों न हों, वह हमारे पास आता है ताकि हमें जोड़ सके और ताकि वह हमें वापस घर ला सके। इसलिए, निर्गमन की पुस्तक, उस जीवन का प्रतिबिम्ब है जिसे जीने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। और वह छुटकारा देने के लिए उपस्थित है। वास्तव में, निर्गमन की पुस्तक छुटकारे की पुस्तक है। लोग पाप में गिरे गए हैं और उन्हें छुटकारा दिए जाने की जरूरत है, और हम ऐसा हर दिन करते हैं। और ऐसा परमेश्वर करता है। वह तब भी हमें अपने करीब लाने में माहिर है, जब हम उसके अनुग्रह से भाग रहे होते हैं।
>
> — रेव्ह. डा. सीप्रियन के. गुचिएन्डा

इस्राएल की वाचा के शाही निभाने वाले के रूप में परमेश्वर के प्रमुख विषय के अलावा, हमें निर्गमन 5:1–18:27 में इस्राएल के विजयी शाही योद्धा के रूप में परमेश्वर पर जोर दिए जाने पर ध्यान देना चाहिए।

विजयी योद्धा (5:1–18:27)

मूसा के दिनों के प्रत्येक प्रमुख साम्राज्य में पुरातात्विक खोजों के दिखाया कि युद्ध में विजय के लिए ईश्वरीय और मानवीय राजशाही को साथ जोड़ना कितना सामान्य था। इसलिए, इस्राएल के विजयी योद्धा के रूप में परमेश्वर के लिए थोड़ा सा भी संकेत यह दर्शाता था कि वह इस्राएल का विजयी राजा भी था।

हम पहले, जब मूसा मिस्र में था, तब इस्राएल के विजयी शाही योद्धा के रूप में परमेश्वर पर विचार करेंगे। फिर हम इस विषय की जाँच करेंगे जब मूसा और इस्राएल मिस्र से सीनै पर्वत तक की यात्रा में थे। आइए मिस्र में मूसा के साथ शुरू करते हैं।

मिस्र में

यह विषय पूरे निर्गमन में दिखाई देता है, लेकिन हम इसे 5:1–13:16 में इस्राएल के छुटकारे के दौरान विशेष रूप से देख सकते हैं। मिस्र के ख़िलाफ़ परमेश्वर के चमत्कारी दंड़ों ने न केवल मूसा के अधिकार को उचित ठहराया; उन्होंने परमेश्वर की विजय को इस्राएल के शाही योद्धा के रूप में भी प्रदर्शित किया।

निर्गमन 12:12 में, परमेश्वर ने अपने महानतम दण्ड, फसह के दण्ड, के महत्व को इस प्रकार अभिव्यक्त किया:

> मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊँगा, — क्या मनुष्य क्या पशु सब के पहिलौठों को मारूँगा — और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूँगा। मैं यहोवा हूँ (निर्गमन 12:12)।

ध्यान दीजिए कि इस पद में परमेश्वर ने घोषणा की, "मैं प्रभु हूँ," या "मैं [याहवेह] हूँ।" यहाँ पर फिर से, परमेश्वर ने स्वयं को वाचा के पूरा होने का कारण बताते हुए ऐसे व्यक्ति के रूप में स्वयं की पहचान की है जो वाचा को स्मरण करता है। इस्राएल के विजयी शाही योद्धा के रूप में, वह "क्या मनुष्य क्या पशु सब के पहिलौठों को मार" डालने पर था। दूसरे शब्दों में, वह मिस्री लोगों और उनके समाज को नष्ट करने जा रहा था क्योंकि उन्होंने स्वयं को उसका शत्रु बना लिया था। और मनुष्यों पर जोर दिए जाने के साथ-साथ, परमेश्वर "मिस्र के सारे देवताओं पर भी दण्ड" लायेगा। वह झूठे देवताओं, दुष्ट आत्माओं को जिनकी पूजा मिस्री लोग करते थे हरायगा।

फिरौन और मिस्री लोगों के ख़िलाफ़ याहवेह के चमत्कारी दण्डों में हम इस दोहरी नीति को देख सकते हैं। सबसे अधिक, यदि सब नहीं, तो इन दण्डों ने एक या उससे ज्यादा मिस्र के झूठे देवताओं के ऊपर विजय भी प्राप्त की। उदाहरण के लिए, जब हारून की छड़ी सांप बनी और उसने फिरौन के जादूगरों के सांपों को निगल लिया, तो यह विजय सिर्फ फिरौन के ऊपर ही नहीं थी। यह विजय उस ईश्वरीय शक्ति के ऊपर थी जो कोबरा के द्वारा चित्रित थी और जो फिरौन के मुकुट की सजावट थी। जब परमेश्वर ने नील नदी को लहू में बदल डाला, तो उसने अपनी शक्ति को मिस्री देवी देवताओं के ऊपर प्रकट किया जो नील नदी के साथ जुड़ी थी, जैसे हापी, सेपेक, जिसने मगरमच्छ का रूप धारण किया, खनुम, हाटमिहेट जिसका निशान मछली था। मेंढकों की महामारी ने हेखेत पर परमेश्वर की शक्ति को दिखाया, मिस्र की ऐसी देवी जिसे मेंढक के सिर वाले मनुष्य के रूप में दिखाया गया था। मिस्र के किसी भी देवता को कुटकियों की महामारी के साथ को निर्णायक तौर पर जोड़ा नहीं जा सका है। लेकिन विद्वानों ने कई सुझाव दिए हैं जैसे कि गेब, पृथ्वी का देवता। इस महामारी ने भी मिस्र के पुजारियों और जादूगरों को अपमानित करने का काम किया होगा। डासों की महामारी खेपरे देवता के ख़िलाफ़ कार्यवाही हो सकती है, जिसे अक्सर उड़ने वाली भौंरे के रूप में चित्रित किया गया। पशुधन की मौत ने सांड के रूप में चित्रित विविध देवताओं के ऊपर परमेश्वर की शक्ति को दिखाया, जैसे कि अपिस, बुखिस, मनेविस, पटाह और रे, और साथ में इसीस, जो देवताओं की रानी थी और हथोर जो सुंदरता और प्यार की देवी थी। इन दोनों देवियों को गाय के रूप में चित्रित किया गया था। फोड़ों फफोलो की महामारी ने संभवत सेखमेत और इमहोटेप के ऊपर परमेश्वर की शक्ति को प्रदर्शित किया था, जो बीमारी और चंगाई से जुड़े थे। ओलो के दण्ड ने नुट, आकाश की देवी और शू देवी, जो आकाश को थामे रखती थी इनके ऊपर परमेश्वर की शक्ति को दिखाया था। टिड्डियाँ सेनेहेम के ख़िलाफ़ थी जो कीटों से सुरक्षा देता था। अंधकार के दण्ड ने महान सूर्य देवता रे, या अमोन-रे के ऊपर याहवेह की शक्ति को दिखाया। फिर पहिलौठों के लिए मौत की अंतिम महामारी मिन और इसिस के साथ एक टकराव था, ऐसी देवियाँ जो बच्चे जनने से जुड़ी थीं। जैसे कि इन

संबंधों ने संकेत दिया, मिस्र में परमेश्वर के चमत्कारी दण्डों ने ने केवल उसके शारीरिक शत्रुओं के ऊपर, बल्कि उसके आत्मिक शत्रुओं, शैतान की सेना के ऊपर भी उसके विजय को दिखाया।

जब मूसा मिस्र में था तो हमने इस्राएल के विजयी शाही योद्धा के रूप में परमेश्वर के विषय को देख लिया है। लेकिन मनुष्यों और आत्मिक शत्रुओं के ऊपर परमेश्वर की जीत तब भी दिखाई देती है जब मूसा और इस्राएली लोग निर्गमन 13:17–18:27 में सीनै की ओर कूच में थे।

कूच में (13:17–18:27)।

बेशक, यह तथ्य कि परमेश्वर ने इस्राएल की सेना का सीनै पर्वत के मार्ग पर कठिनाईयों के माध्यम से नेतृत्व किया, उसे इस्राएल के शाही योद्धा के रूप में उजागर करता है। लेकिन शायद लाल समुद्र पर मूसा के गीत पर फिर से लौटना निर्गमन के इस पहलू को स्पष्ट करने का सबसे अच्छा तरीका है। निर्गमन 15:3-4 को सुनिए जहाँ मूसा ने गाया:

> यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है। फिरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया (निर्गमन 15:3-4)।

यहाँ मूसा ने याहवेह को स्पष्ट रूप से "एक योद्धा," के रूप में पहचाना, और फिर दोहराया कि "उसका नाम [याहवेह] है।" परमेश्वर के नाम और योद्धा के रूप में परमेश्वर के बीच इस करीबी संबंध ने पुराने नियम के जाने पहचाने वक्तव्य "सेनाओं का यहोवा" या "सेनाओं का याहवेह" की पृष्ठभूमि को बनाया। जैसा कि उसका नाम इंगित करता है, परमेश्वर, शाही योद्धा, सेनाओं के बनने का कारण बनता है, और वह अपने शत्रुओं को हराता है। इस मामले में, उसने "फिरौन के रथों और उसकी सेना" को "समुद्र में" डालने के द्वारा उन पर विजय प्राप्त की। फिर, निर्गमन 15:11 में, मूसा ने परमेश्वर की जीत के आत्मिक पहलू को भी पहचाना जब उसने कहा:

> हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तेरे समान कौन है — तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य और आश्चर्यकर्म का कर्ता है? (निर्गमन 15:11)।

परमेश्वर की जीत ने न केवल मिस्र की मानव सेना के ऊपर उसकी शक्ति दिखाई, बल्कि इसने उसकी विजय को मिस्र के सभी झूठे देवताओं के ऊपर भी प्रदर्शित किया।

> इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर विजयी योद्धा है? खैर, प्राचीन संसार में इसका अर्थ मूल रूप से है कि परमेश्वर सृष्टि का प्रभु और सच्चा राजा है, और ठीक यही हम निर्गमन 15 में भी देखते हैं। 15:11 में इस स्तुतिगान में यह एक महान प्रश्न पूछता है: "यहोवा के तुल्य कौन है?" और उत्तर है, कोई नहीं। कोई भी नहीं है, और विशेष रूप से, कोई भी देवता या देवी नहीं है जो परमेश्वर के तुल्य हैं। तो यह है, जब हम परमेश्वर के बारे में एक विजयी योद्धा होने की बात करते हैं, तो यह उस संदर्भ में एक शक्तिशाली कथन है जहाँ पर सैंकड़ों अन्य देवता हैं जो परमेश्वर की उपाधि के लिए संघर्ष कर रहे हैं। और मूल रूप से, बाइबल जो करती है वह वास्तव में सूक्ष्म है। वह प्रश्न पूछती है, "यहोवा के तुल्य कौन है?" और उत्तर है कि कोई नहीं, इस तर्क के साथ कि: तुम सोचते हो कि अन्य देवता हैं, लेकिन अंततः निर्णायक रूप से, केवल एक ही है जो परमेश्वर की उपाधि के योग्य है, और वह यहोवा है। और फिर "यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा" के साथ निर्गमन 15 समाप्त होता है। और इसी तरह के योद्धा को हम चाहेंगे कि हमारे लिए लड़ाई को लड़े।

— डॉ. ब्रायन डी रसल

निर्गमन की पुस्तक ने दूसरी पीढ़ी के श्रोताओं को प्रोत्साहन देने के लिए फिरौन और उसके झूठे देवताओं के ऊपर याहवेह की जीत पर जोर दिया। परमेश्वर उनके शारीरिक एवं आत्मिक शत्रुओं को भी हराने में सक्षम था। उन्होंने सीखा कि अतीत में परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के लिए कैसे लड़ाई लड़ी थी। इस तरह, उन्होंने यह भी जान लिया कि जब वे कनान पर विजय प्राप्त करने जाते हैं तो भविष्य में वह उन्हें कैसे जीत दिलाएगा।

बहुत कुछ इसी तरह, जब मसीही लोग निर्गमन में परमेश्वर की महान जीत के बारे में पढ़ते हैं, तो हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि नया नियम मसीह की जीत के बारे में क्या सिखाता है। मत्ती 12:28 और 29, यूहन्ना 12:31, और कुलुस्सियों 2:15 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि मसीह ने हमारे ईश्वरीय शाही योद्धा के रूप में कार्य किया जब उसने अपने राज्य का उद्घाटन किया। लेकिन जबकि यीशु ने शैतान और संसार के झूठे देवताओं को पराजित किया, उसने दया करके क्षमा और परमेश्वर के साथ सामंजस्य को भी उन सब के लिए पेश किया जो उसके प्रति समर्पण करेंगे।

और 1 कुरिन्थियों 15:25, इब्रानियों 1:3 and 1 पतरस 3:22, जैसे अनुच्छेदों में, हम सीखते हैं कि अपने राज्य की निरंतरता के दौरान यीशु हमारा शाही विजयी योद्धा है। पूरे कलीसियाई इतिहास में हमें संसार में शैतान और अन्य दुष्ट आत्माओं को पराजित करने की मसीह की रणनीति का अनुकरण करना है। और हमें मसीह में विश्वास के द्वारा क्षमा और परमेश्वर से मेल मिलाप को प्रस्तुत करना जारी रखना है।

अंत में, 2 थिस्सलुनीकियों 1:6 और 7, इब्रानियों 10:27, और 2 पतरस 3:7, जैसे अनुच्छेदों में हम पाते हैं, कि अपने राज्य की परिपूर्णता के समय, मसीह ईश्वरीय शाही योद्धा के रूप में एक बार फिर से लौटेगा। लेकिन उसके वापस लौटने पर, मेल मिलाप के लिए मसीह की कृपालु पेशकश समाप्त हो जाएगी। जिन लोगों ने मसीह के पास आने से मना कर दिया है, उनको शैतान और उसके दूतों के समान दण्ड को भोगना पड़ेगा — परमेश्वर का अंनत दण्ड।

इस्राएल के शाही वाचा को निभाने वाले और विजयी शाही योद्धा के रूप में परमेश्वर के प्रमुख विषयों को देख लेने के बाद, हमें निर्गमन में तीसरे प्रमुख विषय की ओर मुड़ना चाहिए: निर्गमन 19:1–24:11 में इस्राएल के शाही वाचा रूपी व्यवस्था को देने वाले के रूप में परमेश्वर।

वाचा रूपी व्यवस्था का देने वाला (19:1–24:11)

जैसा कि हमने पहले देखा, ये पद मूसा के अधिकार और इस्राएल के वाचा रूपी व्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। प्राचीन मध्य पूर्व में, लोगों का मानना था कि दोनों मानव एवं ईश्वरीय राजाओं ने अपनी बुद्धि का उजागर उस व्यवस्था के माध्यम से किया जिसे उन्होंने दिया। इसलिए, निर्गमन के मूल श्रोताओं को आश्चर्य नहीं हुआ होगा कि परमेश्वर उनका शाही वाचा रूपी व्यवस्था को देने वाला था। लेकिन, हमारे लिए पहचानना कि मूसा ने इस विषय पर कैसे जोर दिया, यह देखने में मदद मिलेगी कि परमेश्वर ने निर्गमन की पुस्तक में अपनी व्यवस्था क्यों दी।

प्रत्येक प्रमुख प्रोटेस्टेंट परंपरा ने व्यवस्था के तीन मुख्य उपयोगों की बात की है। पहला वह है जिसे अक्सर "यूसस पेडागोजिकस" कहा जाता है, यानी व्यवस्था का शैक्षणिक उपयोग। गलातियों 3:23-26, रोमियों 3:20, और रोमियों 5:20 और 21 जैसे नए नियम के अनुच्छेद सिखाते हैं कि परमेश्वर पाप को उभारने एवं उजागर करने के लिए व्यवस्था का उपयोग करता है। इस तरह, मनुष्य उद्धार के लिए मसीह के पास आने को प्रेरित होता है। दूसरा, प्रोटेस्टेंट लोग व्यवस्था के नागरिक या राजनीतिक उपयोग के लिए जिस शब्द का उपयोग करते हैं उसे कभी-कभी "यूसस सिविलस" कहा जाता है। इस उपयोग में, परमेश्वर की सजा के खतरे के द्वारा व्यवस्था समाज में पाप को रोकता है। लेकिन, पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के लिए सामान्य रूप से ये दृष्टिकोण चाहे कितने भी सत्य हों, निर्गमन की पुस्तक उस बात पर

जोर देती है जिसे "व्यवस्था का तीसरा उपयोग" कहा गया है। इसे कभी-कभी "यूसस नॉर्मेटिवस" मानकीय उपयोग, या "यूसस डाएडैक्टिकस" यानी निर्देशात्मक उपयोग के रूप में संदर्भित किया जाता है। इस केस में, परमेश्वर की व्यवस्था मानक, या निर्देश है, उन सभी के लिए जो पहले से ही उसके अनुग्रह की आधीन हैं। इसलिए, निर्गमन की पुस्तक में, परमेश्वर ने मुख्यतः अपने लोगों, इस्राएल का मार्गदर्शन अपनी आशीषों की ओर करने के लिए व्यवस्था को दिया।

यह विषय निर्गमन में कई स्थानों पर दिखाई देता है। लेकिन यह विशेष रूप से 19:1–24:11 में स्पष्ट है, इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा की शुरूआत से और वाचा के अनुसमर्थन से होकर जारी रहता है। निर्गमन 19:4 को सुनिए जहाँ परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा:

> तुम ने स्वयं देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या किया, और तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ (निर्गमन 19:4)।

हम यहाँ पर देखते हैं कि इससे पहले कि इस्राएलियों ने व्यवस्था को प्राप्त किया, उन्होंने पहले ही परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कर लिया था। पद 5 और 6 में, परमेश्वर फिर व्यवस्था के प्रति इस्राएल की आज्ञाकारिता की शर्त और वफादारी के लाभों की ओर मुड़ता है। उसने कहा:

> इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे। समस्त पृथ्वी तो मेरी है, तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:5-6)

पहले से ही परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त कर, अब इस्राएल उसका "निज धन," "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" ठहरेगा, यदि वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। स्पष्ट है, कि परमेश्वर की व्यवस्था इसलिए नहीं दी गई थी ताकि इस्राएल अपने उद्धार को कमा सके। जब पहले से ही उसने उन पर दया दिखाई थी, तो व्यवस्था उसके लोगों के लिए उसका उपहार था।

निर्गमन 20:1-17 में ठीक यही पैटर्न दिखाई देता है। 20:2 में, इस्राएल के प्रति अपनी भलाई की घोषणा के साथ परमेश्वर ने दस आज्ञाओं की शुरूआत, यह कहते हुए की:

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है (निर्गमन 20:2)।

एक बार फिर, हम देखते है कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की दया उसकी व्यवस्था से पहले आती है। जब तक यह घोषणा नहीं कर दी गई उसके बाद ही परमेश्वर ने इस्राएल को दस आज्ञाएँ दी। और, जैसे कि कई दस आज्ञाएं स्पष्ट रूप से बताते हैं, इस्राएल व्यवस्था के पालन के लिए आशीषों को प्राप्त करेगा।

> हो सकता है कि कुछ लोग परमेश्वर की व्यवस्था को कसने वाला और अनुग्रह के विरोधात्मक के रूप में सोचते हैं, लेकिन जब हम उस तरीके को देखते हैं जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम में व्यवस्था को दिया, तो हम देख सकते हैं कि व्यवस्था को उस तरीके से देना जैसा परमेश्वर ने किया, उसके लिए यह अनुग्रहकारी बात थी। जो हम देखते हैं वह यह है कि मिस्र में दासत्व के बंधन से छुटकारा देने के बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को व्यवस्था दी। जब वह उन्हें बाहर निकाल लाया और शक्तिशाली रूप से उनकी ओर से हस्तक्षेप किया, तो फिर वह उन्हें जंगल में लाता है और उन पर अनुग्रह करता है और अपनी योजना को प्रकट करता है कि परमेश्वर जो कि उनका महान राजा है उसके प्रभुत्व और बादशाहत के आधीन उन्हें कैसे रहना है। और इसलिए, व्यवस्था कुछ ऐसी चीज़ नहीं है जिसका पालन करने की माँग परमेश्वर अपने लोगों से करता है ताकि फिर वह उन्हें छुड़ा सके। इसके विपरीत, परमेश्वर द्वारा उन्हें मिस्र से छुड़ा लेने के बाद व्यवस्था दी गई थी

> और उसने अपने लोगों को वह तरीका दिखाया जिसमें उन्हें एक महान राजा के रूप में परमेश्वर के प्रभुत्व के आधीन रहना है, और कैसे उन्हें एक दूसरे के बीच में छुड़ाये गए लोगों के समान रहना है। और इसलिए, जब कभी आप पुराने नियम में व्यवस्था के बारे में पढ़ते हैं, तो यह पहले से ही उसके लोगों को परमेश्वर के अनुग्रहकारी कृपालुता के संदर्भ में दिया जा चुका है।
>
> — डॉ. बेन्डन डी. क्रोव

परमेश्वर ने इस पैटर्न को वाचा की अभिपुष्टि के दौरान भी प्रदर्शित किया। निर्गमन 24:1 और 2 में, उसने सीनै पर्वत पर अपने पास आने के लिए इस्राएल के अगुवों को अनुग्रहकारिता के साथ आमंत्रित किया। पद 3-8 में, लोगों ने व्यवस्था को पालन करने का वचन दिया। और पद 9-11 में, इस्राएल के अगुवों ने परमेश्वर के साथ शांति की आशीष को मनाया, और वास्तव में परमेश्वर को देखा।

मूल श्रोताओं के लिए, अतीत में परमेश्वर की व्यवस्था के अनुग्रहकारी और लाभकारी चरित्र पर इस जोर ने उनके अपने समय में परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने की उनकी जरूरत के लिए उन्हें सावधान किया। उनकी वर्तमान परिस्थितियों में और भविष्य में भी, व्यवस्था परमेश्वर की ओर से उनका उपहार था।

इसके साथ साथ, मसीह के अनुयायियों के रूप में, हर बार जब हम निर्गमन की पुस्तक में इस्राएल के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को देखते हैं, तो हमें उन्हें हमारे लिए मसीह में परमेश्वर के अनुग्रहकारी और लाभकारी उपहार के रूप में देखना है।

अब, हम जानते हैं कि अपने राज्य के उद्घाटन में, यीशु और उसके प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं ने हमारे युग के लिए मूसा की व्यवस्था को लागू करने में मदद करने हेतु कलीसिया को नए प्रकाशन दिए। लेकिन मत्ती 5:17, रोमियों 8:4 और इब्रानियों 8:10 जैसे अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं कि यीशु और उसके अनुयायियों ने मूसा की व्यवस्था के अधिकार को तुच्छ नहीं जाना। और राज्य की निरंतरता के दौरान भी यही सच है। आज, हम लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था का पालन ऐसे नहीं करना चाहिए जैसे कि मसीह नहीं आया है। लेकिन हमें आज इसको मसीह में परमेश्वर के और ज्यादा प्रकाशन के दृष्टिकोण में लागू करना चाहिए। और, जैसा कि हम जानते हैं, जब मसीह अपने राज्य की परिपूर्णता के समय लौटता है, तो उसके लोगों को पूरी तरह से पवित्र बनाया जायेगा। तब हम लोग, नई सृष्टि में, परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था का जो हमारे हृदयों में लिखा होगा पालन करेंगे।

इस्राएल के शाही वाचा को निभाने वाले के रूप में, विजयी शाही योद्धा के रूप में, और शाही वाचा रूपी व्यवस्था के देने वाले के रूप में परमेश्वर का पता लगाने के द्वारा हमने निर्गमन की पुस्तक में प्रमुख विषयों का ओर देख लिया है। अंत में, आइए निर्गमन 24:12–40:38 में इस्राएल के वर्तमान योद्धा के रूप में परमेश्वर के विषय पर विचार करते हैं।

वर्तमान योद्धा (24:12–40:38)

> निर्गमन की पुस्तक इस्राएल के ऊपर यहोवा की बादशाहत पर बहुत ही रोचक जानकारी देती है। अक्सर जब लोग पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो वे शाऊल को इस्राएल के पहले राजा के रूप में सोचते हैं, और कहने के लिए, वह पहला संसारिक राजा है। लेकिन जब आप निर्गमन 19:5 और 6 पढ़ते हैं, तो यह इस्राएल के बारे में "याजकों का राज्य" होने की बात करता है। खैर, बिना राजा के आपके पास राज्य नहीं हो सकता, और इसलिए, निर्गमन 19:5-6 का दृष्टिकोण है कि इस्राएल का पहला राजा वास्तव में स्वयं परमेश्वर है। और चाहे भले ही पुराने नियम में परमेश्वर मसीह में देहधारित नहीं हुआ, फिर भी वह स्वयं को राजा के

> रूप में दृश्यमान करता है, और मसीह में उसके बादशाहत दिन को बादल और रात को आग के खम्बे के इन चित्रों के माध्यम से दृश्यमान है। मिलाप वाला तम्बू इम्मानुएल, "परमेश्वर हमारे साथ" का चिन्ह बनता है। और इस तरह, परमेश्वर की बादशाहत इन आकृतियों और प्रतीकों में दिखाई देती है जिन्हें वह इस्राएल को देता है जिसके द्वारा वह अपना शासन और बादशाहत को इस्राएल के ऊपर मसीह के माध्यम से दिखाता है।
>
> — डॉ. डॉन कोलेट

हम परमेश्वर की शाही उपस्थिति के विषय को सबसे स्पष्ट रूप से निर्गमन 24:12–40:38 में देखते हैं। निर्गमन का यह चौथा प्रमुख विभाजन मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू पर केंद्रित है। ये अध्याय दोहराते हैं कि कैसे परमेश्वर ने मिलाप वाले तम्बू के लिए मूसा को निर्देश दिए, कैसे इस्राएल सीनै पर्वत की तली पर विफल रहा, और कैसे मूसा ने मिलाप वाले तम्बू के निर्माण में इस्राएल की अगुवाई की। इन घटनाओं में से प्रत्येक ने अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति पर जोर दिया। निर्गमन 33:14 में, परमेश्वर ने मूसा को आश्वस्त किया:

> मेरी उपस्थिति तेरे साथ चलेगी, और मैं तुझे विश्राम दूँगा (निर्गमन 33:14)।

इस पद में "मेरी उपस्थिति" वाली अभिव्यक्ति इब्रानी संज्ञा פָּנִים (पनीम) का अनुवाद है, वह शब्द जिसे आम तौर पर "चेहरा" अनुवादित किया जाता है। निर्गमन और अन्य स्थानों पर कई अनुच्छेदों में, परमेश्वर का "चेहरा" अपने लोगों के साथ उसकी विशेष, घनिष्ठ, चौकस, और अकसर दिखाई देने वाली उपस्थिति को दर्शाता है।

यद्यपि परमेश्वर सर्वव्यापी है, वह पूरे बाइबल में स्वयं को अपने लोगों के प्रति विशेष तरीके से समर्पित करता है। निर्गमन के इस भाग में, परमेश्वर की उपस्थिति मिलाप वाले तम्बू में और उसके करीब निवास करती थी। जैसा कि इस पाठ में पहले हमने उल्लेख किया, मिलाप वाला तम्बू एक गिरजाघर या उस जगह से बहुत बड़ कर था जहाँ इस्राएली लोग आराधना करते थे। इस्राएल के लोग मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की आराधना करते थे क्योंकि वह परमेश्वर का शाही युद्ध वाला तम्बू था। जैसे प्राचीन मानवीय राजा जब युद्ध के लिए अपनी सेना का नेतृत्व करते थे तो शाही युद्ध वाले तम्बू में रहते थे, बहुत कुछ उसी तरह कनान की विजय की ओर इस्राएल की सेना की अगुवाई करने के लिए परमेश्वर ने अपने मिलाप वाले तम्बू में निवास किया।

अब, निर्गमन 32:1–34:35 में, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति गंभीर रूप से खतरे में थी। इस प्रकरण में, हम सीनै पर्वत पर इस्राएल की विफलता और नवीकरण के बारे में पढ़ते हैं। जब परमेश्वर ने पहली बार देखा कि इस्राएली लोग सीनै पर सुनहरे बछड़े की पूजा कर रहे हैं, तो उसने मूसा को छोड़कर पूरे देश को नष्ट करने की धमकी दी। लेकिन मूसा की प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर ने तरस खाया और केवल उन लोगों को दंडित किया जिन्होंने पाप किया था। फिर भी, जब वे आगे बढ़े तो परमेश्वर ने अपने लोगों पर से अपनी उपस्थिति को हटाने की धमकी दी। लेकिन ईश्वरीय राजा की उपस्थिति के बिना आगे कूच करने का विचार अकल्पनीय था। निर्गमन 33:15-16 को सुनिए जहाँ मूसा ने परमेश्वर से कहा:

> यदि तेरी उपस्थिति हमारे साथ न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले चल। यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है, क्या इससे नहीं कि तू हमारे साथ चले? जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें? (निर्गमन 33:15-16)।

यहाँ ध्यान दें कि मूसा ने परमेश्वर से इस्राएल को आगे न भेजने के लिए कहा "यदि [तेरी] उपस्थिति [हमारे] साथ न [चले]।" उसे फिर से आश्वासन चाहिए था कि उनके बीच में सब कुछ ठीक

था। और वह परमेश्वर से उस बात को न हटाने के लिए बिनती करता है जो उन्हें "पृथ्वी के सब लोगों से" अलग करती थी, अर्थात, उनके साथ परमेश्वर की उपस्थिति। निर्गमन 33:17 में, परमेश्वर ने इस तरीके से जवाब दिया:

> मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूँगा, क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है (निर्गमन 33:17)

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि निर्गमन 40:38, पुस्तक के अंतिम पद ने, मिलाप वाले तम्बू में इस्राएल के साथ परमेश्वर की उपस्थिति पर प्रकाश डाला।

> इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:38)।
>
> परमेश्वर की उपस्थिति उसके लोगों के साथ है। वह झाड़ी में मूसा के साथ उपस्थित था। रात में उन्हें आग और दिन के दौरान बादल से उनका मार्गदर्शन करते हुए, वह अपने लोगों के साथ इस आग के खम्बे और इस बादल के साथ उपस्थित है। और फिर, जब हम पुस्तक के बाद वाले अध्यायों में आते हैं, पुस्तक के ऐसे भाग जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, परमेश्वर उन्हें एक तम्बू देता है, मिलाप वाला तम्बू। और इस मिलाप वाले तम्बू के भीतर वह उन्हें वाचा का संदूक देता है, जहाँ पर प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति वहाँ है। और जो बात मुझे इस बारे में पसंद है वह है कि हम देखते हैं कि परमेश्वर वह परमेश्वर हैं जो अपने लोगों के साथ रहना चाहता है, जो कि, मेरे लिए, अच्छी तरह से पूर्वाभास करता जिसका सामना हम यूहन्ना 1 में करते हैं, जब वह कहता है:
>
> वचन देहधारी हुआ और अपने लोगों के साथ मिलाप वाले तम्बू में डेरा किया (यूहन्ना 1:14 शाब्दिक)
>
> पुराने नियम में परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहना चाहता था, और अंततः नए नियम में परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को अपने लोगों के साथ रहने के लिए भेजा।
>
> — डॉ. डेविड टी. लैम्ब

नया नियम परमेश्वर की विशेष शाही उपस्थिति के इस प्रमुख विषय को मसीह के अनुयायियों के लिए मसीह के राज्य के सभी तीनों चरणों पर लागू करता है। मत्ती 18:20 और यूहन्ना 2:19-21 जैसे अनुच्छेद समझाते हैं कि अपने राज्य के उद्घाटन में मसीह स्वयं अपने लोगों के साथ परमेश्वर की अलौकिक शाही उपस्थिति था। वास्तव में, यूहन्ना 1:14 इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू और यीशु के पहले आगमन के बीच एक स्पष्ट संबंध बनाता है। इस पद को सुनिए:

> और वचन देहधारी हुआ और और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया। और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसे पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:14)।

यह कथन "हमारे बीच में डेरा किया" यूनानी शब्द σκηνόω (स्केनो) से निकला है। सेप्टुआजिन्ट, जो यूनानी पुराना नियम है, इब्रानी क्रिया שָׁכַן (शाकन) के लिए इसी शब्द का प्रयोग करता

है जो परमेश्वर के मिलाप वाले तम्बू में उसकी उपस्थिति के लिए दिखाई देता है। तो, यह पद इंगित करता है कि मसीह का देहधारण था, विजय की ओर नेतृत्व करते हुए अपने लोगों के साथ परमेश्वर।

इसके अलावा, प्रेरितों के काम 2:17 और रोमियो 5:5 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि जब मसीह का स्वर्गारोहण हुआ, तो उसने अपनी आत्मा को मसीह के अनुयायियों पर उँडेला। इसलिए, मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, पवित्र आत्मा उसकी कलीसिया में वास करता है। जैसे परमेश्वर ने मिलाप वाले तम्बू को अपनी उपस्थिति से भर दिया, वैसे ही पवित्र आत्मा उसके लोगों को अपनी विशेष गंभीर उपस्थिति से भरता है जो हमें दिन-प्रतिदिन परमेश्वर के मार्गदर्शन और विजय की गारंटी देता है।

और बेशक, प्रकाशितवाक्य 21:3 जैसे नए नियम के अनुच्छेद भी सिखाते हैं कि मसीह का देहधारण और वर्तमान में पवित्र आत्मा की उपस्थिति, नई सृष्टि में परमेश्वर की शाही उपस्थिति के आश्चर्य का पूर्वाभास है। जब मसीह अपने राज्य की परिपूर्णता में लौटता है, तो वह सब चीज़ों को नया बनाएगा। और पूरी सृष्टि अपने उपस्थित योद्धा राजा के दिखाई देने वाली महिमा के साथ भर दी जाएगी।

उपसंहार

इस पाठ में जिसका शीर्षक "निर्गमन का अवलोकन" है, हमने ध्यान में रखने के लिए कुछ प्रारंभिक विचार प्रस्तुत किए हैं जिसमें इसका लेखक, समय, वास्तविक अर्थ, और आधुनिक अनुप्रयोग शामिल हैं। पुस्तक को दो मुख्य भागों में विभाजित करने के द्वारा हमने निर्गमन की संरचना और सामग्री का भी पता लगाया है। और हमने कुछ प्रमुख विषयों पर ध्यान दिया, जिनमें शामिल है कि कैसे परमेश्वर की बादशाहत के कई आयामों पर पूरी पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।

जब इस्राएली लोग मूसा के साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमा पर डेरा डाले थे तो निर्गमन की पुस्तक का इसके इस्राएली श्रोताओं के लिए जबरदस्त महत्व था। जब इस्राएलियों ने अपने दिनों में परमेश्वर के लिए जीने की चुनौतियों पर विचार किया, तो निर्गमन ने उन्हें उनके राष्ट्र के परमेश्वर द्वारा ठहराये गए अगुवे के रूप में मूसा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पूष्टि करने के लिए बुलाया। इस पुस्तक ने उन्हें मिस्र से लेकर सीनै पर्वच तक उनके छुटकारे में मूसा की भूमिका के बारे में स्मरण कराया। और इसने उन्हें स्मरण दिलाया कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश के लिए तैयार किया था।

बहुत कुछ इसी तरह, आज मसीह के अनुयायियों के रूप में, निर्गमन की पुस्तक हमें मूसा के अधिकार के प्रति हमारी निष्ठा की पुष्टि करने के लिए बुलाती है, लेकिन उसी प्रकाश में जो कार्य परमेश्वर ने मसीह में पूरा किया है। इस्राएल के अगुवे के रूप में परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से जितना कार्य किया, निर्गमन की पुस्तक हमें दिखाती है कि परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से कितना और ज्यादा कार्य किया है। मसीह में, परमेश्वर ने हमें पाप की गुलामी और शैतान के प्रभुत्व से हमेशा के लिए छुड़ाया है। और मसीह में, परमेश्वर ने हमें मसीह की आत्मा की उपस्थिति और हमें मार्गदर्शन देने के लिए निर्देश दिए हैं। और इस प्रकाश में, निर्गमन की पुस्तक हमें अधिक से अधिक सीखने के लिए अनगिनत अवसर प्रदान करती है कि जब वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में प्रतिज्ञा किए गए हमारी अनंत विरासत में हमारी अगुवाई करता है तो हमें कैसे मसीह का अनुसरण करना है।